K.S.

जयगुरुदेव की अमरवाणी

(भाग-२)

जयगुरुदेव नाम प्रभु का

जयगुरुदेव की अमरवाणी

भाग 2

जयगुरुदेव की अमरवाणी

(शाकाहारी सदाचारी बालसंध से संकलित)

प्रकाशकः
दिव्या शर्मा
88 साकेत कॉलोनी
मथुरा (उ.प्र.)

मूल्य : 20/-
मुद्रक : अर्जेंट प्रिन्टर्स
पुराना बस स्टैण्ड, मथुरा (उ.प्र.)

बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

विश्व को शान्ति अब इन्हीं से मिलेगी

जयगुरुदेव

प्रकाशक की ओर से......

मुझे बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के वचनों को इन्टरनेट पर देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो कि बाबा जी ने पिछले वर्षों में सत्संग के दौरान सुनाये थे। मैंने इन्टरनेट www.jaigurudevworld.org पर यह भी देखा कि लगभग सोलह देशों, भारत, अमेरिका, ब्रिटेन इत्यादि तथा मुस्लिम राष्ट्रों के लोग अभी प्रतिदिन भारी संख्या में इन्टरनेट पर इन सन्देशों को देख और पढ़ रहे हैं। यह सन्देश बहुत महत्वपूर्ण हैं और बाबा जी ने पिछले वर्षों में चाहे अस्सी के दशक के हों या अन्य वर्षों के हों, जो भी बातें कहीं हैं वो अब सभी सामने देखने को मिल रही हैं।

मुझे प्रेरणा हुई कि क्यों न बाबा जी के सन्देशों को संकलित करके पुस्तक का रूप दे दिया जाये। साथ ही प्रेमियों की माँग पर बाबा जी के कुछ सन्देशों का संकलन मैं प्रस्तुत कर रही हूँ। आशा करती हूँ कि बाबा जी के आध्यात्मिक, सामाजिक, पारीवारिक सन्देश पाठकों को मानव-धर्म एवं आत्मिक धर्म अपनाने की प्रेरणा देंगे।

–दिव्या शर्मा

विषय सूची

1. एक माह का ब्रह्मचर्य रखो 7
2. काल का डण्डा बजेगा 8
3. नया रास्ता अपनाना होगा 9
4. बाबा जी का पैगाम 9
5. प्रजातंत्र 10
6. विचार करो 11
7. आओ तुम्हें बहिश्त दें 12
8. गुरु कृपा से 12
9. सुनो, समझो और होश में आ जाओ 13
10. सहन शक्ति कौन देगा? 13
11. मैंने स्वप्न में भी नहीं कहा कि... 14
12. समय की प्रतीक्षा है 15
13. नीचे उतर कर आओ 15
14. आग जलती रहेगी 16
15. काम तो होगा ही 18
16. तुम्हें महात्माओं के पास जाना ही होगा 18
17. वह समय आ रहा है 19
18. नया संविधान बनेगा 20
19. क्या होगा? खुदा ही जाने 21
20. हथौड़ी, हथौड़ा और घन 22
21. अब योजना चलेगी.... 23
22. अपने काम में लगे रहो 24
23. तुम बर्दाश्त करो 25
24. आवाज बहुत दिनों की 26
25. जो कुछ कहूँगा सब कुछ देखने को मिलेगा 26
26. क्या आप सुमिरन करते हैं? 27
27. यह भारत भूमि है 29
28. युद्ध वासनाओं का 30
29. होश में आ जाओ 32
30. अब राज्य सुधर्म का होगा 33

31. धीरज-धर्म	34
32. जयगुरुदेव का संकल्प	35
33. अब संभल जाओ	36
34. इतिहास जीवात्माओं का	37
35. भविष्य का विधान	38
36. बाबा जयगुरुदेव का पत्र	39
37. राष्ट्र की उन्नति चाहते हो तो	40
38. पत्र प्रतिनिधियों से अनुरोध	41
39. निवेदन सम्पादकों और संवाददाताओं से	42
40. स्वामी जी का पत्र	43
41. मैंने कहा था	44
42. देश का दुर्भाग्य	45
43. गुरु सब जानता है	46
44. सच्चे प्रजातंत्र की रक्षा महात्मा करेंगे	47
45. थोड़ी प्रतीक्षा करें	48
46. विदेशी दूषित अन्न से भारतवासियों का नैतिक...	49
47. धर्माचार्यों, राजनीतिज्ञों को नेक सलाह	50
48. औतारी शक्तियों का जन्म हो चुका है	50
49. उच्च पदाधिकारियों से अपील	51
50. भूत, भविष्य की जानकारी	53
51. देश में बहुमत का राज्य नहीं	54
52. प्रजातंत्र को समझें	55
53. भारत अखण्ड राज्य होगा	56
54. दिल्ली की भूमि का असर	57
55. पक्षियों का अण्डा गलीज़ खून	58
56. परिवर्तन का कारण भारतवर्ष बनेगा	59
57. पाकिस्तान का ख्वाब मत देखो	60
58. भारत का भाग्य	61
59. शाकाहारी सदाचारी बालसंघ	63

एक माह का ब्रह्मचर्य रखो

जब तक तुम आँखों के ऊपर नहीं उठोगे तब तक कुछ मिलने वाला नहीं। आध्यात्मवाद की पढ़ाई आँखों के ऊपर से ही शुरू होती है। शरीर से साधना नहीं हो सकती। अगर डॉक्टर से दूर रहना चाहते हो तो थोड़ा सा काम से दूर रहो। ब्रह्मचर्य का पालन करो। मैं यह नहीं कहता कि घर-बार छोड़ दो। मगर एक महीने का ब्रह्मचर्य रखो। एक महीने का ब्रह्मचर्य रखने से शरीर ठीक रहेगा, शरीर में स्फूर्ती रहेगी, आलस नहीं रहेगा। राज कार्य भी ठीक से होगा। बीमारी नहीं आयेगी। डॉक्टर को पैसे नहीं देने होंगे। खर्च कम होगा, दवा की जरूरत नहीं पड़ेगी और तब ईमानदारी आयेगी। हर काम ठीक समय पर होगा। ड्यूटी में जी नहीं चुरायेंगे और तब महात्मा के पास भी ठीक-ठीक समय देंगे। सवेरे तब देर तक नहीं सोयेंगे। इस प्रकार केवल एक माह के ब्रह्मचर्य से इतने सारे फायदे होंगे और जीवन सुखमय हो जाएगा। मेरे कहने के अनुसार ब्रह्मचर्य को महीने में केवल एक बार ही तोड़ें। वर्ष में बारह महीने होते हैं, तब आपके शरीर में बल रहेगा। तब आप अपनी मुक्ति के लिए काम कर सकेंगे। अध्यात्म विद्या की ओर विचार जाएगा और तब महात्मा के पास ठीक-ठीक समय दे देंगे। तब जितना समय तुमसे माँगता हूँ व दे दोगे। तब तुम्हें अन्दर के अनुभव अवश्य होंगे।

(शाकाहारी पात्रिका: 28 अप्रैल 1980)

भजन के लिए तड़प होना जरूरी है। तड़प ऐसी होनी चाहिए जैसे माँ अपने बच्चे के लिए न मिलने पर तड़प जाती है। तड़प से मन कमजोर होता है और भजन में वक्त सुरत का साथ देने लगता है। साथ रहने वाले भजन जरूर करें। जो दूर रहते हैं वो भी साथ भजन नहीं करते। कभी किया, कभी नहीं किया। भजन करते हो तो बताना चाहिए कि क्या अनुभव होता है? (1 दिसम्बर 2008)

काल का डण्डा बजेगा

आपको याद करना होगा कि आने वाली तकलीफ जो भविष्य में आ रही है उसे हिन्दुस्तान का कोई भी आदमी दूर नहीं कर सकता। महात्माओं की मेहरबानी होगी तो आने वाली तकलीफों में कमी हो सकेगी। मैं कोई मजाक लेकर नहीं आया हूँ। कोई बेकार में, मुफ्त में समय खोने नहीं आया हूँ। क्या जरूरत है समय खोने की? भविष्य का नक्शा दिखाई पड़ रहा है जो खराब है। इसलिए तुमको आगाह करने आया हूँ। धर्म की बात तो है नहीं। सब लोग आतंकित हैं कि क्या होगा? कहीं कोई सुरक्षित नहीं है। युग और जमाना ऐसा आ गया। अब किसी का किसी पर विश्वास नहीं।

समझ लो अच्छी तरह से कि तकलीफें और परेशानियाँ आयेंगी, उसमें सब ठीक किये जायेंगे। बड़े-बड़े अच्छे विद्वानों को भी यह बात याद दिला रहा हूँ। सबको मेरी बात लिख लेना चाहिए। इसलिए प्रेम पूर्वक सब लोग मेरी बातों को सुन लें और उस पर विचार करें। जो सन्देश हम आपको देना चाहते हैं, मान लोगे तुम्हारी खुशी की बात होगी। अगर नहीं मानोगे तो वह डण्डा लिए खड़ा है और सिर पर मारकर आपको ठीक कर देगा।

(शाकाहारी पत्रिका: 28 जून 1980)

आज बाबा जी ने अपने सन्देश में कहा कि-मालिक की दया आप पर हो रही है। और जो ऐसे समय में दया ले लेगा वो भव-सागर से पार हो जाएगा। आपका सौभाग्य है कि आपको सत्संग मिल रहा है। जिनको सत्संग नहीं मिलता वो दु:खी हैं। समुद्र में गोता लगा रहे हैं। झूठ, अहंकार, झूठी शंका, भ्रम हो गया। बच्चे-बच्चियों! उस रास्ते पर चलो जिससे छूट जायें, बेड़ियाँ कट जायें। ये तुम्हारा घर नहीं। यहाँ एक दिन सब कुछ छोड़कर जाना है। मेरा स्वाथय ठीक नहीं फिर भी मैं तुम्हारे काम के लिए लगा रहता हूँ। आप थोड़ा सा हमारा साथ दे दो। आपको सत्संग मिल रहा है।***(भण्डारा, मथुरा: 4 दिसम्बर 2008)***

नया रास्ता अपनाना होगा

सारा देश धर्म के सूत्र में बँधने जा रहा है। आप भी योगदान दीजिए, धर्म के सूत्र में बँध जाइए। जो हम कहेंगे वह सब आपके सामने आएगा। एक नया रास्ता आपको अपनाना होगा। देश में भारी परिवर्तन होगा। हुकूमत करने वालों! सबको अच्छी शिक्षा दो। महात्माओं को अब गुफाओं-कंदराओं में बैठने की जरूरत नहीं। उन सबको बाहर आ जाना चाहिए। मेरी आँखें धोखा नहीं दे सकती हैं। मुझे आप क्या धोखा द सकते हो? यह दाढ़ी इसी तरह से सफेद नहीं हुई है। काफी समय देखने को मिला, बहुत कुछ अनुभव में आया। आप यह इच्छा रखते हो कि जमाना बदल जाए। बाबा जी की कोशिश फलीभूत होगी। समय बदलेगा। परिवर्तन होगा। सतयुग अवश्य आएगा।

-बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पात्रिका: 14 जुलाई 1980)

बाबा जी का पैगाम

इन माताओं के गर्भ से कुछ ऐसे बच्चों का अवतार हो गया है जो आपको सीधा करेंगे, दिल्ली वालों को भी सीधा करेंगे! वो बच्चे इन माताओं के गर्भ से आ गए और उसका ज्ञान आपको थोड़े दिनों में होने वाला है। उनका संकेत हर प्रान्तों में हम कर देंगे। हमारी आवाज के साथ हमारी पत्रिका बनेगी और जहाँ तक ये हवा जाएगी वहाँ तक यह पत्रिका जाएगी और वह हवा आप में प्रवेश कर जाएगी। सब जगह घूम-घूमकर यह हवा हम पहुँचा देंगे। औतारी शक्तियों का एक पूरा समाज, एक पूरी नाट्यशाला उतरी हुई है, जो यहाँ काम करेगी। यह संकेत हम पहले से ही आपको दे रहे हैं। वक्त का इन्तजार तो करना ही पड़ता है!

-बाबा जयगुरुदेव, 1967

प्रजातंत्र

जब गड़बड़ प्रजातंत्र होता है तो सबको डर रहता ही है। वास्तविक प्रजातंत्र में बिल्कुल डर नहीं रहता है। मैं आपको पूरा-पूरा विश्वास दिलाता हूँ कि आप जनता को सुखी कर दीजिए, जनता आपका पूरा साथ देगी किन्तु अगर आपने बाबा जी की बात न मानी तो यह भी है कि जनता आपके हाथों से निकल जाएगी। बाबा जी जैसे पहले थे, जैसे पहले बोलते थे वैसे ही अब भी हैं और अब भी वही बोल रहे हैं और भविष्य में भी ऐसे ही रहेंगे और सबके हित की बात कहने में पीछे नहीं हटेंगे। यह मत समझो कि बाबा जी पहले कुछ और थे, अब कुछ और हैं और आगे कुछ और हो जायेंगे। देशवासियों से और जितनी भी राजनीतिक संस्थायें हैं उन सबसे अनुरोध करता हूँ कि उनको प्रजातंत्र में किसी भी प्रकार का विघ्न और बाधा पहुँचाने का कोई हक नहीं है। यही वास्तविक प्रजातंत्र है। आप अकेले में व्यक्तिगत रूप से चाहे किसी से लड़ जाओ, झगड़ जाओ, गाली-गलौच करो लेकिन सार्वजनिक रूप से किसी संस्था पर कीचड़ मत उछालो, एक-दूसरे को हानि मत पहुँचाओ।

यहाँ पर इतना बड़ा समुदाय बैठा हुआ है। इसे आप केवल मेला-मात्र मत समझिए। यह एक परिवार है, यहाँ सबकी बहू-बेटियाँ बैठी हुई हैं। लेकिन सब मर्यादा में हैं। इस प्रजातंत्र में इतना बड़ा जन-समुदाय एक परिवार के रूप में बदल गया है। इससे आपको कुछ समझने और सीखने की जरूरत है।

-बाबा जयगुरुदेव:1981

यह कर्मों का देश है। कोई कर्मी जीव जब आ जाता है तो घटनायें होती हैं। सत्संगियों की सम्हाल हो जाती है। जो साधक हैं वे इस रहस्य को जानते हैं।

(11 दिसम्बर 2008)

विचार करो

देशवासियों! आज हाहाकार मचा हुआ है, उपद्रव हो रहे हैं। उससे मनुष्य की राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था बिल्कुल अंग-भंग हो रही है। जिसके कारण यह इतना पीड़ित होता जा रहा है, इतना अशांत है कि बुद्धि और हृदय स्थिर नहीं हैं और विचार उठ रहे हैं कि आज का युग हमें क्या दे रहा है? क्या बता रहा है? विभिन्न प्रकार की जितनी भी पार्टियाँ इस समय पर चल रही हैं हम उनके लिए केवल इतना ही समझायेंगे कि सब लोग एक-दूसरे की आलोचना करना बन्द कर दो। सब लोग मिल-जुलकर सोचें और विचार करें और समस्याओं का समाधान निकालें। मैं आपको यह सलाह दूँगा कि सब लोग खड़े हो जायें और यह विचार करें कि क्या करना है? आपकी समझ में न आये तो महात्माओं की समाजों में आकर खड़े हो जाइए और उनसे यह विचार ले लीजिए कि समस्याओं का समाधान कैसे किया जाये? आजादी की सुरक्षा आपको स्वयं करनी होगी। अपने प्रारब्ध पर विश्वास रखें। जब हम अपने भाग्य पर खड़े हो जायेंगे तो यह धरती माता सब कुछ हमको देने लगेगी, नौकरी से पूरा पड़ने लगेगा, व्यवसाय से पूरा पड़ने लगेगा। लेकिन यदि आप बुरे कामों को करेंगे, लूटपाट, अन्याय और अत्याचार करेंगे तो उसका प्रायश्चित सबको करना होगा। ***-बाबा जयगुरुदेव***

महात्माओं की भाषा देर से समझ में आती है। बाबा जी अपील करके, प्रार्थना करके सबको अपना सन्देश दे रहे हैं कि शाकाहारी हो जाओ, जीवों पर दया करो। कुदरत नाराज है और उसके नियमों के विपरीत चलोगे तो वो पीस डालेगी। मालिक को याद करोगे तो तकलीफों की आँधी जो आने वाली है बगल से निकल जाएगी वर्ना उसकी चपेट में आ गए तो तुम्हारे चिथड़े उड़ जायेंगे।

(24 दिसम्बर 2008)

आओ तुम्हें बहिश्त दें

खुदा किसकी मदद से मिलेगा?

फकीरों की।

1. बरक्कत फकीरों की दुआ से लो।
2. हक-हलाल की कमाई में से मोहताजों, यतीमों व गरीब-गुर्बों को दो।
3. रूहों को मत सताओ।
4. जिस्मानी कपड़े जो रूहें पहनती हैं उसे खुदा उतार देगा।
5. जुल्मी-जालिम मत बनो।
6. सच इन्सानियत का तकाजा है। जिसे मुहब्बत के लिए तुम दर-बदर औलाद और धन में भटकते हो, मुकम्मिल मुहब्बत का खजाना तुम्हारे दिल में है। उसका राज व दरवाजा फकीरों से मिलेगा।

आओ! तुम्हें बहिश्त दें। मुक्ति और मोक्ष सन्तों और फकीरों के कदमों में त्रिवेणी संगम बनकर पड़ी रहती है। मुरीदों और भक्तों की बेमिसाल तकरीरें सुनने से काफिरों के दिल उड़ जायेंगे और दिन को तारे दिखाई देने लग जायेंगे।

-बाबा जयगुरुदेव:1981

गुरु कृपा से

बाबा जी ने बताया कि मैंने अपना काम पूरा कर लिया है। गुरु-कृपा से मैं भगवान से जुड़ चुका हूँ। यह मनुष्य-शरीर भगवान को पाने के लिए मिला है। इस शरीर में एक शिव नेत्र है जिसे खोलकर ईश्वर का दर्शन किया जा सकता है। पर ऐसा गुरु-कृपा से ही संभव है। हमने अपने शरीर को इन्द्रिय भोगों में लगा दिया। माँस, ताड़ी खा-पीकर आपने इतना पाप किया कि उसका फल आपको भोगना पड़ रहा है।

(शाकाहारी पत्रिका: 14 नवम्बर 1971)

सुनो, समझो और होश में आ जाओ

हमारे गुरु महाराज ने सन् 1945 में कुछ कसाइयों को बकरे काटते देख कर कहा था कि-आज तुम जिस बेरहमी से इन बेजुबान पशुओं को काटते हो, मगर वह समय भी दूर नहीं जबकि तुम भी काटे जाओगे और हमने तथा आपने भी देखा कि दो साल बाद की सन् 47 (1947 ई.) में कैसी मार-काट मची। कहने का मतलब यह है कि जैसा करोगे वैसा भोगना पड़ेगा चाहे किसी भी शक्ल में क्या न भुगतना पड़े और कभी चाहे क्यों न भुगता जाये। इस वास्ते मेरे सन्देश को कृपा कर अपने ही हित में सुनो, समझो और होश में आ जाओ। अभी भी समय है। रास्ता बताने वाले भी मौजूद हैं। दया करके वे तुम्हें अपना लेंगे। सन्तों, महात्माओं की शरण में जाने से ही अब काम चल सकेगा। क्योंकि ईश्वर का विधान अटल है बदला नहीं जाता। यह दिल्ली का या किसी और देश का विधान नहीं। इन्सानों का बनाया विधान नहीं जिसे जब चाहा बदल लिया। यह ईश्वरीय विधान है। इसके सामने बड़े से बड़े और छोटे से छोटे सब बराबर हैं। पाप कर्म करने वालों को वही सजा मिलती है जो विधान कहता है। चाहे वह बादशाह हो या चाकर हो या भिखारी हो, वही हैसियत होती है। इसी प्रकार पुण्य-कर्म करने में भी समानता है।

-शाकाहारी पत्रिका: 14 जुलाई 1983)

सहन शक्ति कौन देगा?

सहन शक्ति हमें आज का वातावरण नहीं दे सकता। वह तो हमें तब मिलेगा जब हमारे अन्दर की भारतीय आत्मा जागेगी, भारतीय धर्म जागेगा। जब धर्म के प्रति आस्था दृढ़ होगी तभी धार्मिक पुरुषों की वाणियों का बल हमें मिलेगा। महान् पुरुषों की वाणियों पर हम विश्वास लायेंगे तभी हम अपनी विरोधी परिस्थितियों को सहन कर सकेंगे।

-बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

(शाकाहारी पत्रिका: 28 जून 1971)

मैंने स्वप्न में भी नहीं कहा कि...

पाँच सौ वर्ष पहले, चार सौ वर्ष पहले कोई ज्यादा दिनों की बात नहीं है, लोग नमक हलाल थे। पानी की जगह खून गिरा देते थे। उसका हम अदा करते थे। अपना लक्ष्य अच्छा रहेगा तो कोई कुछ नहीं कर सकता। आप अपने काम में रहिए। देखते-देखते लोगों की समझ में आने लगेगी। मैं तो इतना ही कहूँगा कि आप किसी की बुराई न करें। बुराई को देर करो। जो लोग दूसरों की बुराई करते हैं वह भारी बोझ लादते हैं और वह न लोक बना सकते न परलोक बना सकते हैं, न चरित्र, सेवा, सदाचार ला सकते हैं। अपनी बुराई को खत्म करने का उपाय करो। महात्मा अग्नि हैं, सूरज हैं। वह सभी पापों को भस्म कर देंगे।

लोगों को अब महसूस होने लगा है कि परिवर्तन होगा, चाहे जिस प्रकार से हो। इस देश में वही होता है जो प्रभु का मंजूर होता है। आगे जो समय आ रहा है, उसका निचोड़ मैं इतना ही रख सकता हूँ कि भारी तकलीफ आने वाली है। मैंने स्वप्न में भी नहीं कहा कि मैं जयगुरुदेव हूँ। मैंने हर जगह बताया कि 'जयगुरुदेव' नाम उस परम शक्ति का है। फिर भी लोगों ने भूल-भ्रम बना रखा है। कब समझोगे? जब परिवर्तन हो जायेगा तक? जो तकलीफ आ रही है उस समय आप सबको फकीरों, महात्माओं की जरूरत पड़ेगी। आप खुद सोचो। मेरे सोचने की जरूरत नहीं है। आपकी जिम्मेदारी है। आप लोग जो होनहार बच्चे हैं उनसे सम्पर्क स्थापित करो। जितनी जल्दी करोगे उतना ही अच्छा रहेगा। सब काम दिए हुए समय में हो जाएगा। तुम मर्द हो तो टाट पहनकर आ जाओ। यह ऋषियों-मुनियों और तपस्वियों का वेष है।

-बाबा जयगुरुदेव:1981)

हिन्दू धर्म को सारी दुनिया के लोग कबूल करेंगे।

-बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

(शाकाहारी पत्रिका: 14 दिसम्बर 1971)

समय की प्रतीक्षा है

मैं यह प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि ऐसा जमाने का परिवर्तन होगा कि तुम्हारे दिल और दिमाग में उसका नाम और निशान भी नहीं है। देश के अन्दर ऐसा परिवर्तन होगा-आप देखते तो रहिए। समय का इन्तजार देवताओं ने, राम और कृष्ण ने, अर्जुन ने, बौद्ध और मौहम्मद ने किया। आपको और हमको भी समय का इन्तजार और प्रतीक्षा करनी है। वह समय धीरे-धीरे तुम्हारी तरफ चला आ रहा है और तुम धीरे-धीरे उस समय की तरफ चले जा रहे हो। और जब उस समय का और तुम्हारा भरत मिलाप होगा वहीं पर गुल खिलेगा। तुम्हारे और उस समय के बीच मे बाबा जी तुम्हें धैर्य दे रहे हैं कि धीरज रखो, जमाना बदलेगा। लेकिन यह बताने के लिए मैं कभी तैयार नहीं हूँ कि किस तरह से परिवर्तन हो जाएगा। तुम मेरी गर्दन के पीदे, मेरी कमर में बँध जाओ फिर भी बाबा जी के मस्तक का हाल नहीं ले सकते हो।

-बाबा जयगुरुदेव

-शाकाहारी पत्रिका: 14 जुलाई 1983)

नीचे उतर कर आओ

मैं यह चाहता हूँ कि प्रजातंत्र का वास्तव में नाम लेते हो तो जिस तरह से विपक्ष के लोग पैदल चलते हैं, ऐसे ही राज करने वालों को नीचे उतर आना चाहिए। आकाश के वाहन और पृथ्वी के वाहन, इन सभी पर प्रतिबन्ध लग जाना चाहिए और नीचे उतर कर जनता में आप अपना प्रचार कीजिए और प्रजातंत्र के मुताबिक इनसे समर्थन लीजिए। नीचे उतर कर आ जाओ और देश की जनता को तुम समझाओ। उसके बाद देखो कि कौन इसको ठीक करता है।

ऐ राष्ट्रपति जी! जब कभी भी आपके पास में चुनाव कराने का प्रस्ताव आये तो उसको पास कर देना और उसी प्रस्ताव पर लिख देना कि वर्तमान प्रधानमंत्री कार्यवाकह नहीं बनाया जाएगा।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 14 नवम्बर 1984)

आग जलती रहेगी

इस जगत में महात्माओं की शिक्षा को भली-भाँति बाँध लो। होशियारी के साथ संसार का व्यवहार करो। यह कभी नहीं कहता हूँ कि घर, बच्चे और काम-काज छोड़ दो, पति-पत्नी जुदा हो जाओ। अपनी मर्यादा में काम-काज करते हुए, पति-पत्नी साथ रहते हुए कम से कम कुछ दिनों तक ब्रह्मचर्य का पालन तो करो। रोज अण्डे खाओगे, रोज मरोगे। जब तुम्हारी शक्ति क्षीण हो जाएगी तो बीमारी तुमको आएगी कि मुझको आएगी? बीमार पड़ोगे, डॉक्टरों को बुलाओगे, खरीद लिए जाओगे। पैसे भी चले जायेंगे शरीर से भी जाओगे, दफ्तर से भी जाओगे, काम-काज से भी जाओगे, घर के सुख-सामान से भी जाओगे। आज तमाम दुनिया इसीलिए बीमार हो गई। दे अण्डे, दे माँस, दे मछली, दे शराब। जब से सब खाने-पीने लगे तो तमाम दुनिया के मर्ज लग गए। उन जानवरों के खून को जिनमें तरह-तरह की बीमारियाँ हैं, खा लिया। डॉक्टर भी जब खून चढ़ाता है तो टैस्ट करके चढ़ाता है। आपने कौन बकरी, मछली का खून टैस्ट कर लिया कि वो तुम्हारे शरीर के माफिक पड़ेगा कि नहीं? उन जानवरों में भी बीमार होती है तो तुम बीमार नहीं पड़ोगे तो क्या अच्छे रहोगे? ये विदेशी डॉक्टर आए, विदेशी दवाई आई, विदेशी डिग्री आई, विदेशी बीमारी आई और हिन्दुस्तान में फैला दी गई। सबके सब इस मर्ज में अब रो रहे हैं। और अस्पताल खोल लिए गए। बाबा जी ने यही तो कहा कि साल भर में अस्पतालों में तुम जितने बीमारों को अच्छा करते हो हम उनको एक हफ्ते में अच्छा कर देंगे। इसमें कोई दवा नहीं, न कोई औजार चलाना। लेकिन अच्छे हो जाओगे। जब एक मर्ज से अच्छे हो जाओ तो दुबारा उस मर्ज को क्यों बुलाते हो? जब तुम बड़े नादान और नासमझ हो। अतः ग्रहस्थ आश्रम में ब्रह्मचर्य का पालन करना बहुत अनिवार्य है। शारीरिक शक्ति क्षीण नहीं होती है, दिल-दिमाग बिल्कुल स्वस्थ्य रहता है और दफ्तर एवं घर के काम-काज में स्फूर्ती बनी रहती है। लेकिन जब शारीरिक शक्ति को क्षीण कर दोगे तो टी.बी. के मरीज बन जाओगे। इसलिए तुम अच्छे चंगे बनो।

समय की प्रतीक्षा है

खेती व व्यवसाय का काम-काज ईमानदारी व नेक-नीयती से करने लगो। ऐसे दुःख में, क्लेश में जो अपने धर्म का, सत्यता का पालन कष्ट उठा करके करता है, वक कलयुग में बहुत बड़ा त्यागी और तपस्वी समझा जाता है और इसमें कोई भी संदेह नहीं कि जो-जो लोग भी निकट आए, उन्होंने इतनी बुराइयों को छोड़ा कि लोग देखकर दाँतों तले उंगली दबा जाते हैं और सीखते हैं। यह कहने लगते हैं कि दफ्तर में रहकर रिश्वत नहीं लेता तो कहीं मेरा दुश्मन न बन जाये। आपको यह मालूम होना चाहिए कि हर दफ्तर में मेरा एक आदमी मिलेगा जो तुम्हारे हर कारनामों को नोट कर रहा है। शराब पीते हो, रिश्वत लेते हो, मक्कारी करते हो तो वह सब नोट करता है लेकिन उसको आप पहचान नहीं सकते हो। मैंने ऐसे आदमियों को तैयार किया कि अन्दर-अन्दर में तो 'जयगुरुदेव' की आग जलती रहेगी लेकिन जबान से नहीं निकलेगा। और ऐसे भी आदमियों को तैयार कर दिया है कि बाहर जुबान पर आ गया। जब जन-जन की जबान पर 'जयगुरुदेव' नाम आएगा तभी सच्ची सुख-शान्ति मिलेगी।

-बाबा जयगुरुदेवः (शाकाहारी पत्रिका-7 अक्टूबर 1981)

बाबा जी ने कहा कि भक्ति का मार्ग बहुत झीना है। भक्ति करना जैसा कि लोग सोचते हैं आसान नहीं है। स्त्री अपने पति को जीवनभर के लिए सब कुछ समर्पित कर देती है। पति की आज्ञानुसार सेवा करती है, पतिव्रता कहलाती है। अगर वो आज्ञा का पालन नहीं करती तो कुचानल कहलाती है। इसी तरह सेवक यदि स्वामी की आज्ञा का पालन नहीं करता तो वो कपटी भक्त कहलाता है। यह कपट-भक्ति है। ऐसा कपटी भक्ति सत्संग में ठहर नहीं सकता। उसका मन काबू में नहीं रहता है और गुरु पर आरोप भी लगाता रहता है और अपने दोषों की तरफ नहीं देखता। सत्संगियों को इन सब बातों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए। गुरु के वचन याद रहेंगे तो काल और माया के दाँव फेल हो जायेंगे। *-बाबा जयगुरुदेव, 18 दिसम्बर 2008*

काम तो होगा ही

एक बात मैंने आपको बताया है कि आप लोग किसी की, किसी साधू-सन्त की निंदा मत करो। जो लोग बुराई कर रहे हैं उनको करने दो। हमें बुराई नहीं करनी है। हमें अपने काम से ही फरसत नहीं है। जिसके पास काम नहीं होता वह दूसरों की बुराई करते हैं। कृष्ण भगवान ने कहा था कि तुम लोग साथ दे दो, तुमको श्रेय मिल जाएगा। साथ नहीं भी दोगे तब भी काम हो जाएगा। तो मतलब यह कि काम तो होगा ही। पहले भी बहुत काम हुआ अब भी काम होगा। तुम लोगों में तो मैंने सब कुछ भरा, इतना सत्संग सुनाया कि शायद इतना किसी ने भी नहीं किया होगा। इसकी चर्चा, इसका असर लोगों में फैल गया है। आपने यह देखा होगा कि मैंने कभी किसी की बुराई नहीं की। बेकार के काम से क्या फायदा, जिससे कुछ मिलने वाला है नहीं। मैं अपने काम में पहले भी लगा था अब भी लगा हूँ, आगे भी लगा रहूँगा।

-बाबा जयगुरुदेव: 9 अगस्त, 1983

शाकाहारी पत्रिका: 28 जनवरी 1984

तुम्हें महात्माओं के पास जाना ही होगा

आप लोग हमारी बातों को ध्यान से सुनो और समझो। महात्मा समयानुकूल एक ऐसा जाल बनाकर फेंक देते हैं, जिसमें छोटी-बड़ी सभी मछलियाँ फँस जायें। वो ऐसा जाल फेंकते हैं कि न तो बड़े छूटें न छोटे छूटें। सब मगरमच्छ फँस जायें और छटपआ-छटपटा कर रह जायें। तुमको अभी समझ नहीं है पर आगे सभी बातें खुल जायेंगी। आगे व्यवस्था और बिगड़ेगी। महात्माओं से पूछना होगा। वो तरीका बतायेंगे। उनसे ही सब ठीक होगा लेकिन तुम अपना नाम चाहते हो, तुम अपनी प्रशंसा चाहते हो कि यह किया, वह किया तो कुछ भी ठीक नहीं होगा। आगे क्या होने वाला है इसको तुम नहीं समझ रहे हो।

-बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

(शाकाहारी पत्रिका: 24 मई 1985)

वह समय आ रहा है

समय-समय पर विभूतियाँ, महान् आत्मायें जगत हित, मानव हित, मानव-कल्याण के लिए आती रहीं। उन्होंने कोई भेद-भाव, जाति-पाँति का नहीं रखा। वे समस्त प्राणियों के लिए, समस्त मानव-इन्सानों के लिए, समस्त हिन्दू-मुसलमान, सिख, ईसाईयों के लिए रहीं। तुम्हारा सबका एक ही मालिक है, एक ही रास्ता आने का और एक ही रास्ता वापस जाने का। वही खुदा, वही भगवान। जब एक ही चीज है तो यह तंगदिली, ये हृदय के संकोच, ये छोटे-मोटे झगड़े जिन्होंने दिलों के टुकड़े करके अलग-अलग बाँट दिया और अब एक-दूसरे का हृदय मिलता नहीं है, तो अब भगवान का भजन कैसे होगा? आत्म-कल्याण कैसे होगा? घर-परिवार में प्यार-मोहब्बत कैसे रहेगा? आप लोगों की सेवा सद्भाव और आदर-सत्कार के साथ कैसे कर सकोगे? आपने ये सब खराबी, खामियाँ स्वयं अपनी इच्छानुसार लाकर खड़ी कर दीं। अब उससे आप सबको ही दारुण दु:ख, तकलीफ मिल रही है। इसलिए महात्माओं के द्वारा एक रास्ता मिल जाएगा, उस रास्ते से विचार मिल जायेंगे। विचार से सहयोग, ताकत और ज्ञान मिलेगा। उससे बुराईयाँ चली जाती हैं, सद्भाव, अच्छाइयाँ और सदाचार आते हैं तब मानव-मानव में सब में मोहब्बत, प्यार और एक-दूसरे के काम सब आने लगते हैं। जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे की सब मदद करते हैं। सृष्टि का एक नवीन आनन्द झलकता है। इसी झलक में परमात्मा का, वास्तविकता का दर्शन होता है और लोग अपनी-अपनी आत्माओं का कल्याण करते हैं। समय-समय पर यह समय बदलता रहा और वह समय आगे आ रहा जब मानव भगवान की तरफ मुड़ चलेगा, चीखने लगेगा, रो पड़ेगा, बेचैन होगा और उसके लिए वह इतना जोर का आतुर होकर भागेगा, उसको प्यास और भूख जगेगी कि लोग यह कहेंगे कि इन लोगों को क्या हो गया?

-बाबा जयगुरुदेव

-शाकाहारी पत्रिका: 28 मार्च 1984)

नया संविधान बनेगा

ये 85 करोड़ किसान जो मिट्टी में काम करते हैं, क्या इनको भारत का विधान मालूम है? इनको नहीं मालूम कि क्या विधान है, क्या नहीं है। भारत की जनता को बोलना नहीं आता, व्यक्त करना नहीं आता। मैं इसको जगा दूँगा तो यह बोलने लगेगी, इसको व्यक्त करना आ जाएगा। मैं तुम्हारे लिए दिल से चाहता हूँ कि पूरा का पूरा हिन्दुस्तान का संविधान यानि कानून बदल दिया जाए। ये जनता भी यही चाहती है। इस देश का संविधान पेड़ों के नीचे बैठकर बनेगा। वहाँ (लोकसभा) में बैठकर नहीं बनेगा, जहाँ 18 अरब रुपया एक साल में खर्च होता है। वह पेड़ों के नीचे बनेगा और कुदरत बादल ले आकर सामने खड़ा कर देगी, हवा चला देगी। अभी थोड़े दिनों में पूरा का पूरा देश का संविधान बनाकर हिन्दुस्तान के सामने रख दिया जाएगा और जब तक हर आदमी इसकी मंजूरी नहीं दे देता, तब तक वो लागू नहीं होगा। देश का नया संविधान इन किसानों की जबान पर इस तरह से याद हो जाएगा जैसे रामायण की चौपाइयाँ याद हो जाती हैं। जैसे गीता के श्लोक याद हो जाते हैं। इस तरह से जब भारत का संविधान किसानों को याद हो जाएगा तो सब लोगों को सीधा न्याय और सीधी रक्षा मिलने लगेगी। सबको काम मिलेगा और समृद्ध हो जायेंगे। प्रकृति के द्वारा सब खुशहाल हो जायेंगे।

-बाबा जयगुरुदेव, शाकाहारी पत्रिका: 14 जून 1984)

लगभग तीस वर्ष पहले बाबा जी ने कहा था कि आगे जब तकलीफों की आँधी चलेगी तो त्राहिमाम-त्राहिमाम मचेगा। इसलिए तुम लोग अभी से गृहस्थ आश्रम में रहते हुए, बुराइयों से बचते हुए भजन में लग जाओ। बचाव का यही रास्ता है। किसी की भी निंदा, आलोचना मत करो, अपने को देखो। हम जो कुछ भी कहेंगे, वह हमारी बात भविष्य में ज्यों की त्यों होगी। इसे हिन्दुस्तान का कोई व्यक्ति, कोई पण्डित, कोई मुल्ला काट नहीं सकता है। महात्मा सबके हित की बात कहते हैं। ***- बाबा जयगुरुदेव जी महाराज, 7 जनवरी 2009***

क्या होगा ? खुदा ही जाने

खुदा के इरादे को कोई क्या जाने।
खुदा खुद है, खुदा ही जाने।
ज़मी पर इन्सान है, अक्ल कितनी।
जो खुदा को जाने।
खुदा से जुदा इन्सान बेअक्ल है।
ख्वाहिशों के पुतले इन्सान हैं।
ख्वाहिशों से जुदा खुदा है।

-बाबा जयगुरुदेव

धर्म और मजहब को प्रथम इज्जत देनी पड़ेगी। पाप-पुण्य, बद-नेक काम समझना पड़ेगा। मज़हबी तथा धार्मिक पण्डित, पुजारी, साधू, महन्त, मठाधीश और पण्डे! आप तो धर्म की राह में हैं। धर्म व मजहब की हिफाजत कैसे होगी?

देश डूब रहा है। राजनीतिक श्रोता नया विचार व रास्ता लें। मरे शेर की खाल ओढ़ने से शेर नहीं बनोगे। देश में मौतों के अम्बार हर रोज लग रहे हैं। जिम्मेदार रहनुमा सो चुके हैं, अब जागेंगे नहीं। लाख कहो, लाख झिड़को और लाख रोओ, बूढ़ा बैल अब चलेगा नहीं। नया बैल बूढ़े के साथ निकम्मा हो जाएगा।

-बाबा जयगुरुदेव

-शाकाहारी पत्रिका: 7 जुलाई 1984)

बाबा जी ने कहा था कि आने वाले समय में घटनायें बहुत होंगी, अकाल मृत्यु होंगी, कुदरत जब बौखलाएगी तो लड़ाइयाँ हो जायेंगी और लोग इधर-उधर भागने लगेंगे। ऐसे समय में महात्माओं की तरफ, उनके सन्देशों को सुनने के लिए लोग दौड़ेंगे। महात्माओं की दया से ही बचाव होगा वर्ना भारी विनाश हो जाएगा।

-बाबा जयगुरुदेव, 25 दिसम्बर 2008)

अपने काम में लगे रहो

काम त्याग में होते हैं, संग्रह में नहीं। पहले जो राजे-महाराजे थे जनता की रक्षा के लिए सुख के लिए लेकिन आज जो लोग काम कर रहे हैं वह लूटपाट के लिए। त्याग मानव की बहुत बड़ी सम्पत्ति है। सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात से भी बहुमूल्य है। जिन त्यागियों ने जो-जो काम किये आज भी उनके इतिहास मौजूद हैं। हमको भी पेट भरने को मिल जाएगा तो आखिर संग्रह करके क्या होगा ? जो धर्म के लिए बलिदान होते हैं वो बहुत बड़ा त्याग करते हैं, यह छोटी बात नहीं है। यही तपस्या सिद्धी बन जाती है। इसी तपस्या से मुक्ति और मोक्ष मिल जाता है।

आप अपने काम में लगे रहो। यह रास्ता सीधा सच्चा है। आप लगे रहोगे तो काम हो जाएगा। मार्ग पर चलोगे तो रास्ते में कंकड़, रोड़े मिलेंगे। चलते चले जाओगे तो रास्ता बनता चला जाएगा। चलने वाले चलते चले जाते हैं, रास्ता बनता चला जाता है। जब रास्ता बन जाता है तो उस पर बहुत लोग चल पड़ते हैं।

-बाबा जयगुरुदेव, शाकाहारी पत्रिका: 7 अप्रैल 1985

सत्तर के दशक में बाबा जी ने पाकिस्तान के शासकों से कहा था कि आगे जब कभी लड़ाई हो तो तुम पारम्परिक बमों का इस्तेमाल करना जो युद्ध के वक्त किए जाते हैं। अगर तुमने उन बमों का इस्तेमाल किया जिसे फेंकने से सिपाही, जानवर, कीड़े, मकोड़े मरने लगेंगे तो उस वक्त पर भारत का एक फकीर ऐसी उल्टी जबरदस्त आँधी चलाएगा जिसमें हाथी भी उड़ता हुआ नजर आएगा। तेज हवायें उन सारे कीड़ों को ले जाकर वहीं पहुँचा देगी जहाँ से बम फेंके गए होंगे। फिर वहाँ के लोगों का सफाया हो जायेगा। मुसलमान अपनी धर्म पुस्तकों को देखें कि उसमें क्या लिखा है। फकीरों के कलाम कभी झूठे नहीं होते।

-बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

3 जनवरी 2009

तुम बर्दाश्त करो

मैंने जो आपको बताया वह परमार्थ का रास्ता है ऊँचा से ऊँचा। स्वार्थ का रास्ता नहीं है। तुम्हें स्वयं को उलझन नहीं होना चाहिए। जब तुम स्वयं को उलझन में रखोगे तो दूसरों को क्या कहोगे ? एक सत्संगी, एक भक्त, एक ज्ञानी संसार को रोशनी देता है, ज्ञान सिखा जाता है। तुम तो इतने आदमी हो। कुछ नहीं कर पाओगे तो यश कैसे मिलेगा ? इसलिए तुम बर्दाश्त करो, उत्तर-प्रत्युत्तर मत करो। उतना ही समझाओ जितनी जरूरत है। जितनी क्षमता नहीं सुनने वाले की, तुम उस पर लाद दोगे तो वह क्या समझेगा ? मैंने एक का बदला, एक से दस को बदल दिया, दस से सौ को फिर लाखों को बदल दिया और आज कितने लोग बदल गए। अगर इनको मानवता की शिक्षा न मिलती तो आज कुछ का कुछ हो जाता। जो लोग दूर हैं वो लोग कुछ का कुछ कर देते, खूँरेजी हो जाती।

-बाबा जयगुरुदेव

-शाकाहारी पत्रिका: 14 अप्रैल 1985

'जयगुरुदेव' नाम चक्र सुदर्शन की तरह रक्षा करेगा

'जयगुरुदेव' नाम चक्र सुदर्शन की भाँति नर-नारियों की रक्षा करेगा। 'जयगुरुदेव' नाम परमात्मा का है। जो लोग इस नाम को याद करेंगे उनकी हर मुसीबत में रक्षा हो जाएगी। अगर आदमी बेहोशी की हालत में हो और दवायें काम न कर रही हों तो उसके कान में 'जयगुरुदेव' नाम सुना दो फिर होश आ जाएगी। यह बात अलग है कि होश आने पर फिर बेहोश हो जाए। किन्तु उसके कान में यह नाम सुनाया जाए तो बीमारी में चार आने, छः आने बगैर दवा के लाभ होगा।

-बाबा जयगुरुदेव,

शाकाहारी पत्रिका-21 सितम्बर 1971

आवाज बहुत दिनों की

लोगों के द्वारा यह मालूम होता है कि रोग बहुत बढ़ गए हैं। डॉक्टर के पास दवाइयाँ नहीं हैं। इन रोगों से परेशान होकर आपको फिर से वहीं आना पड़ेगा, जहाँ ईश्वर का विश्वास दिलाया जाता है और भजन-ध्यान होता है। हमने पहले ही कहा था कि चाहे जितना कुकर्म कर लो, भौतिक भोगों को इकट्ठा कर लो पर आपको फिर लोटकर आना होगा। आपने बुराइयाँ पैदा कर लीं जिससे परिवार-परिवार लड़ गए, जातियाँ-जातियाँ लड़ गई, समाज-समाज लड़ गए, मुल्क-मुल्क लड़ जायेंगे।

बुरे का का अंजाम बुरा होता है, अच्छे काम काम अच्छा होता है। मैं नित्य पचासों साल से मानव धार्मिक सन्देश सुना रहा हूँ। यह एक-दो दिनों की मेहनत नहीं है, एक-दो दिनों की आवाज नहीं है। यह आवाज जब चारों तरफ भेद लेगी तब काम करेगी। आप सब लोग अपने चारों तरफ अच्छे शब्दों का वातावरण बनाओ जिससे खुद भाव प्रकट होने लगे, अशुद्ध भाव की धुलाई होने लगे। इस काम में मेहनत तो है पर इसी मेहनत से काम हो जाएगा और लोग सुखी हो जायेंगे।

-बाबा जयगुरुदेव,

शाकाहारी पत्रिका: 7 अप्रैल 1985

जो कुछ कहूँगा सब कुछ देखने को मिलेगा

आप सब लोग मेहनत से काम करो, धर्म का प्रचार होकर रहेगा। समय की प्रतीक्षा करो। समय आने पर सभी चर्चा करेंगे, सत्य, प्रेम और अहिंसा की। जो आज महात्माओं की खिल्ली उड़ाते हैं उन्हें निश्चय पछताना होगा। अपराधियों को दण्ड मिलेगा। देश में नई लहर फैलेगी। आज तो लोगों को हँसी सी मालूम होगी क्योंकि मानव की बुद्धि चक्कर में घूम रही है। कुछ दिन बाद आसार दिखाई देंगे।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 7 सितम्बर 1971)

क्या आप सुमिरन करते हैं?

सभी सत्संगी सुमिरन 24 घण्टे में एक बार अवश्य कर लिया करें। सुमिरन में बराबर पाँचों नाम और पाँचों स्वरूप याद कर लेना चाहिए, भूलने का काम नहीं। अगर आप भूल गए, अगर एक भी नाम और एक भी स्वरूप आप भूल गए तो आप समझ लीजिए कि पूरा सुमिरन नहीं हुआ और सुमिरन हो गया खण्डित। माला के घुमाने का नाम सुमिरन नहीं है। सुमिरन, उसका नाम लेते रहें उतनी देर तक उसका स्वरूप हमारे मन में और जिस जगह पर हम दृष्टि को टिकाए हैं उसी जगह पर हमारा मन टिका रहे, तब हमारा जो किया हुआ सुमिरन है वह ठीक हुआ। अगर सुमिरन करते वक्त में स्वरूप सामने नहीं आता है, चित्तवृत्ति आपकी इधर-उधर चली जाती है, मन संकल्प-विकल्प करता है, माला हाथ में घूमती रही तो उसका कोई लाभ नहीं होता। लाभ तो तभी होगा जबकि महात्माओं ने जो सुमिरन करने की विधि बताई कि सुमिरन करते-करते रूप में चित्त टिक जाएगा और फौरन ही जैसे ही जिस समय पर सुमिरन किया था स्वरूप को उसके सामने बैठाया तो वह सामने तत्क्षण आ जाएगा। मगर जब हमारे अनेक प्रकार के सांसारिक भ्रांतिमय काम होंगे और चित्त उसमें फँसा होगा, मन भी संकल्प-विकल्प करता होगा तो रूप कभी नहीं आएगा। नाम आप ले लेंगे मगर स्वरूप नहीं आएगा। नाम के साथ स्वरूप जरूर होना चाहिए। जहाँ नाम है वहाँ रूप जरूर है।

तो पाँचों नामों का आप जो स्मरण करते हैं उसके साथ में पाँचों स्वरूप को आपको अवश्य याद करना होगा। याद करते-करते आप हर वक्त चलते व फिरते जैसे ये बाहर में चाँद और सूरज निकलते हैं, उनका प्रमाण जो दिया जाता है वह इसलिए कि आप बराबर उनको याद करते रहें। और वक्त पर स्वरूप का नक्शा आपके सामने खिंच जाये और उस समय पर कोई दूसरा ख्याल, ध्यान या विचार न उठे। तब कहते हैं कि सुमिरन सच्चा हुआ और उस सुमिरन का जो पूरा फल है वह तो उस समय पर आपको फौरन ही यानि बैठते ही जैसे ही आपने आँखें बन्द कीं और

दृष्टि के सामने आपने देखा तो फौरन ही उसका जो स्वरूप है उसकी लाइट का और उसके चरण कमलों का सामने आ जाता है। और उसको पा करके तो सभी कुछ हो सकता है। चरण कमल जो हैं उस सत्पुरुष के हैं, उस गुरु के हैं वे मौजूद हैं अपनी दृष्टि के सामने। वह कब खुलते हैं? जब हम पाँचों नामों का स्मरण अर्थात सूमिरन ठीक-ठीक से करते हैं। जब तक पाँचों नामों का सुमिरन ठीक नहीं होता तब तक जो पाँचों स्थानों के धनी हैं उनकी पूर्ण रूप से सहायता हमारे ऊपर नहीं हो सकती।

-बाबा जयगुरुदेव

-शाकाहारी पत्रिका: 7 फरवरी 1980

यह संघर्ष अभी और बढ़ेगा

40-45 साल पहले बाबा जी ने कहा था कि एक समय ऐसा आएगा जबकि सभी लोग हर प्रकार से गिर जायेंगे। किसी को किसी का सम्मान नहीं रहेगा। जन-जन में संघर्ष होगा और इस संघर्ष की समाप्ती तभी हो सकेगी जब हम यह इच्छा करेंगे कि राम आ जायें या कृष्ण आ जायें या मोहम्मद या ईसा आ जायें। जब तक ऐसी शक्तियों का आना इस देश में नहीं होगा तब तक यह हमारा एक-दूसरे का संघर्ष समाप्त नहीं होगा।

यह संघर्ष अभी और बढ़ेगा। इस संघर्ष के लिए आपको और प्रतीक्षा करनी होगी और उन संघर्षों के संकेतों को आपको हम बताऐंगे चाहे आप उनको आज सुन लें या कुछ समय बाद सुनें। मगर सुनना जरूर पड़ेगा। वक्त आपको मजबूर कर देगा सुनने के लिए। कुदरत का एक ऐसा तमाचा लगेगा कि सबको अक्ल आ जाएगी और ऐसा परिवर्तन होगा जो अभी किसी के दिल-दिमाग में नहीं है। इन्तजार तो आपको करना ही पड़ेगा। भारत एक आध्यात्मिक देश है और सुख और शान्ति की किरणें पूरे विश्व में यहीं से फैलेंगी।

-बाबा जयगुरुदेव : 8 जनवरी 2009

यह भारत भूमि है

देश में हर मानव को आज के समय में धर्म की शिक्षा की बहुत जरूरत है। जब तक मनुष्य को धर्म की शिक्षा नहीं मिलेगी तब तक उसका दिल-दिमाग स्वच्छ और साफ नहीं होगा। जब तक हृदय साफ नहीं होगा, बुद्धि साफ नहीं होगी तब तक मनुष्य कुछ समझ नहीं सकेगा। इसलिए आज सबको धार्मिक शिक्षा जो मानवता की है वह मिलनी चाहिए। जब मानवता की शिक्षा आयेगी तभी आध्यात्मिक शिक्षा लोग ग्रहण कर सकते हैं। मैंने जो कुछ भी आपको पहले बताया है आप मेरी एक-एक बात को याद करो। मेरी सारी बातें समय-समय पर आपके सामने आती रहेंगी। लोग ऐसी परिस्थितियों में घिर जायेंगे कि निकलना मुश्किल होगा। फिर पस्त होकर कहेंगे कि अब कोई धर्म का सन्देश दे, शान्ति का सन्देश दे और रास्ता दिखाए। अभी जितनी संस्थायें चाहे वो धार्मिक हों, सामाजिक हों उन्होंने जो प्रचार किया उससे बुद्धि का ज्ञान ही जाता रहा। बुद्धि पशुवत् हो गई तो मानव-ज्ञान, मानव-धर्म की बातें समझ में कैसे आयेंगी? एक बात याद रखो; परमात्मा ने ऐसा नियम कर दिया है कि भारत की धरती पर उस बीज का नाश कभी नहीं होगा जो महात्मा डालते हैं। सेवा करने वाले, सत्य बोलने वाले, दूसरों की मदद करने वाले, दूसरों को रोटी खिलाने वाले, पानी पिलाने वाले मेहनती और ईमानदार लोग हमेशा रहेंगे।

जो कुछ कहूँगा सब कुछ देखने को मिलेगा

दुनिया के लोग अब धर्म की तरफ नहीं मुड़ते हैं तो परेशानियाँ तो आयेंगी। वो चाहे जमीन से आ जायें, चाहे आसमान से आ जायें, चाहे पूर्व से आयें या पश्चिम से, परन्तु अब यह आयेंगी जरूर। इनको कोई रोक नहीं सकता है। यदि लोग अपना आचार-विचार, खान-पान ठीक नहीं करते हैं तो एक समय ऐसा आ रहा है कि आदमी को आदमी उठाने वाला नहीं मिलेगा। लोग देख रहे हैं कि पूर्वी पाकिस्तान में लाशें बिछी पड़ी हैं और उनको उठाने वाला नहीं है। अन्य देशों में भी ऐसी स्थिति आने वाली है।*-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 21 मई 1971)*

युद्ध वासनाओं का

परमार्थ में भाव चाहिए। भाव रहेगा तब कुछ मिलेगा। भाव रहेगा तो नींद और आलस नहीं आएगी। भाव नहीं तो नींद आती है, आलस आता है तो कुछ नहीं हो सकता। ये संतमत की साधना सोने का साधन नहीं है। इसमें तो आखिरी वक्त तक जागना है। क्योंकि जरा में ये मन सुस्त हो जाता है और सो जाता है। नामदान लेकर ठीक से सुमिरन, ध्यान, भजन करना, सत्संग के वचनों को ध्यान से सुनना और हमेशा याद रखोगे तभी यह साधना बनेगी। इसीलिए सत्संग सुनाया जाता है। रास्ता बारीक से बारीक है और मन मोटा पहाड़ है। इन मन को इतना बारीक कर दो कि उस बारीक रास्ते में चला जाये। संतमत की साधना सीधी है पर मन महीन नहीं हो पाता है इसलिए ये साधना कठिन लगती है।

हर चीज की अपनी-अपनी जगह है और हर चीज का अपना-अपना मतलब है। सुमिरन अपनी जगह, ध्यान अपनी जगह और भजन अपनी जगह। मालिक के लिए रोना अपनी जगह, उसके लिए तड़पना अपनी जगह और प्रार्थना करना अपनी जगह। लक्ष्य सबका एक है और वो है अपने घर जाने का। जीवात्माओं का अपना घर है सत्तलोक, सचखण्ड। मन उखड़ता है तो कभी उदासीन हो जाता है, कभी भाव में आकर लगता है तो इसे समझना पड़ता है। हरदम इसकी निरख-परख करनी पड़ती है, हमेशा इसके साथ जूझना पड़ता है तब यह धीरे-धीरे मानता है। जब तक ये शब्द को, नाम को, आकाशवाणी को, ईश्वरीय संगीत को नहीं सुनेगा, ये शान्त नहीं होगा। शब्द को सुनकर ही ये वश में होता है। शब्द की मार के बिना ये वशीभूत नहीं होगा। सत्संग मिलना बहुत जरूरी है क्योंकि सत्संग से ही सब बातें मालूम होती हैं। भजन पर बैठते हो तो दूर से ऐसा मालूम होता है कि घण्टा और शंख बज रहा है। पर पास जाने पर वह घण्टा और शंख नहीं है, वह वाणी है। युद्ध वासनाओं का होता है। वासनायें जैसे ही समाप्त होंगी शब्द खींच लेगा। इसलिए सभी महात्माओं ने भजन पर जोर दिया है। शब्द कहो नाम कहो वो एक बार चढ़ गया तो कभी उतरता नहीं। नानक जी ने कहा है कि-

नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।

जगेगा भारत जगेगा

जगेगा भारत जगेगा भारत भारत जगाने आ रहा।
आओ प्यारे आओ प्यारे जमाना बदलने जा रहा।

समय से आओ समय से आओ, समय तुम्हारा आ रहा।
बिगड़ चुके तुम बिगड़ चुके तुम, बनाने तुमको आ रहा।

दुखी हो तुम दुखी हो तुम, दुख तुम्हारा छुड़ाने आ रहा।
लड़ मरे तुम लड़ मरे तुम, मिलाने तुमको आ रहा।

सरधा भाव सब खो चुके तुम,सरधा तुमको दिलाने आ रहा।
प्रेम तुम्हारा सो चुका, प्रेम तुम्हारा जगाने आ रहा।

आपस के प्रेम सब जा चुके, उन प्रेमों को देने आ रहा।
हो चुके मुक्ति से जो निराश, उनको मुक्ति देने आ रहा।

पापों के बोझ जो न उठा सके, उन बोझों को उठाने आ रहा।
ईश्वर भक्ति जिनसे जा चुकी, उनको ईश्वर भक्ति दिलाने आ रहा।

पुरुष सोए सोई नारियाँ, उनको जगाने आ रहा।
बिगड़े तुम्हारे खान-पान, इनको सुधारने आ रहा।

पीते जो सुल्फा शराब, इनको छुड़ाने आ रहा।
बिगड़ी तुम्हारी जो आदतें, इनको बदलने आ रहा।

झगड़े जो तुम्हारे घर घर के, उनको खत्म करने आ रहा।
जिन कर्मों को तू पहचान न सके, उनकी पहचान कराने आ रहा।

गुरुभक्ति से तुम हो दूर, वह गुरुभक्ति दिलाने आ रहा।

होश में आ जाओ

इस मनुष्य-शरीर में रहने वाली जीवात्मा की बैठक दोनों आँखों के पीछे है। यहीं पर बैठकर यह अपना प्रकाश संपूर्ण शरीर में फैलाती है। इस आत्मा को मुसलमान रुह कहते हैं और ईसाई 'सोल' या 'स्प्रिट' के नाम से पुकारते हैं। मौत के समय यह अपने प्रकाश को धीरे-धीरे समेटती है और दोनों आँखों के पीछे संपूर्ण प्रकाश के केन्द्रित हो जाने पर अपने कर्मों का सारा नक्शा दिखाई पड़ता है। जीवन में क्या अच्छा किया क्या बुरा किया सब कुछ ज्यों का त्यों सामने नजर आता है। उस समय जीव पछताता है कि इन अनमोल मानव-जीवन की श्वाँसों को बर्बाद कर दिया। कितने बेगुनाहों को सताया, अखाद्य पदार्थों का सेवन करके पाप-कर्मों को सिर पर लादा, अनाचार, अत्याचार किया! यह शरीर जो केवल परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मिला था उस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। किन्तु उस समय पछताने से क्या लाभ होगा? उधर यम पुलिस तैयार खड़ी रहती है और भयंकर हथियारों से मार-मार कर तुम्हें इस किराये के मकान से अलग कर देगी। उस यमदूत पुलिस की शक्ल इतनी भयानक होती है कि उसके देखने मात्र से शरीर का खून तत्क्षण पानी हो जाता है।

मेरे भाई! तुम होश में आ जाओ। जो कुछ भी समय तुम्हारा बच गया है वह दो वर्ष हो या पाँच वर्ष हो अथवा दस वर्ष हो तुम इस समय से लाभ उठा लो। परमात्मा न कभी इस भू-मण्डल पर आया और न कभी आएगा। किन्तु उसके बोध में महान् आत्मायें बराबर यहाँ आती रहेंगी। तुम अपनी तलाश अभी से शुरू कर दो। वे अंतर्यामी होती हैं। तुम्हारे जिज्ञासा, खोज व भाव के अनुसार तुमसे स्वयं मिल लेंगी या किसी न किसी के जरिए तुम्हें अपने पास बुला लेंगी।

-बाबा जगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 21 मई 1971)

आप हमारा साथ दें

आप हमारा साथ दें और बुरी आदतें छोड़ें। जो लोग माँस, मछली, अण्डे, शराब, ताड़ी, गाँजा, अफीम, भाँग खायेंगे उन्हें जनता अपना अमूल्य मतदान नहीं देगी। *-बाबा जयगुरुदेव-14 जुलाई 1971*

अब राज्य सुधर्म का होगा

मेरे प्यारे भाई-बहनों, बच्चे-बच्चियों! सोच लो कि तुमको अब क्या करना है। मैं तो उन लोगों से भी कहूँगा जो बड़े-बड़े महन्त हैं, मठाधीश हैं और साधू हैं उनको भी अपना कदम इस दिशा में उठा देना चाहिए ताकि समाज सुधार की, देश के सुधार की लहर चारों तरफ उमड़ पड़े। राज आपसे कराना है। आप ही राज करने वाले होंगे, महात्मा कभी राज नहीं करते। महात्माओं ने आपको मर्यादा में लाकर, सारे बुरे कुरीतियों का त्याग कराकर आपसे राज कराया था और आगे भी करायेंगे। अब राज्य सुधर्म का होगा। यह मेरी आवाज है। देश के अन्दर थोड़े ही दिनों में आप देखेंगे कि एक आवाज बहुत जोर से उठ रही है। मैं अकेला नहीं हूँ कि आप यह सोचें कि गाँधी महात्मा की तरह से आवाज उठायें। अगर मेरे अन्दर वह सच्ची आत्मा होगी, परमात्मा की तरफ से यह सच्चा कुछ सन्देश होगा तो मेरी तरह कितने लोग आ चुके हैं।

इसलिए अब बुद्धि को छोड़ दीजिए जो भ्रम की बुद्धि और भूल की बुद्धि है। अपनी बुद्धि से काम लीजिए आप दूसरे के यहाँ बि मत जाइए। दूसरे के हाथ अपने आपको हवाले मत कर दीजिए। आप इसके पहले कुछ सोचिए। सोचने और समझने, सुनने और कहने के पहले आप समझ लीजिए कि मैं किसके हवाले हो रहा हूँ। मैं किसके साथ सारी शक्ति को, आत्मा को बेच रहा हूँ। लोग षड्यंत्र और व्याभिचार के साथ में अपनी शक्ति को बेच देते हैं। हम जरा भी ख्याल नहीं करते हैं इसका।

इसलिए आपको ख्याल करना होगा हमारा साथ आपको देना पड़ेगा। अबर आप साथ नहीं दे सकते हैं तो साथ तो हम ले ही लेंगे। अगर आप में यह बात होगी तो ठीक है। मुझे राज नहीं करना है। माफ करना यह बात हमेशा याद रखना। राज तो आपसे कराना है, लेकिन देवी और देवताओं का धर्म बचाना है। यह व्याभिचार खत्म कराना है। इन कुरीतियों को खत्म करना होगा। यह भ्रष्टाचार खत्म करना है।

तो अब इन समाजों से जो इस समय आपके सामने प्रचलित हैं नहीं

बच सकता है। इसलिए आज कुछ अन्तर से प्रेरणा हुई है। कुछ परमात्मा का हुक्म है कि ऐसा काम तुम करो। साथ-साथ में आत्म-कल्याण भी हो और साथ में समाज-कल्याण भी हो। आपने पुस्तकों में पढ़ा है और गीता में भी आता है कि दिव्य दृष्टि हुआ करती थी और लोग परमात्मा को पाया करते थे। अगर आप इस दायरे के अन्दर आ जायें तो आप निश्चय देख लेंगे कि आपकी दिव्य दृष्टि खुल जायेगी। यह दायरा मैंने ऐसा नहीं बनाया है कि केवल बातों का हो। यह स्त्री-पुरुषों के लिए हव दिव्य आँख है जिससे भगवान को पाया जाता है। समाज का सुधार और तुम्हारे जीव-कल्याण, परमात्मा की प्राप्ति यह सभी साथ-साथ हैं। यदि समाज-सुधार न हुआ तो आखिर तुम बेचारे कहाँ जाओगे? इसीलिए भ्रम में अपना समय बिता दोगे। तुम चले जाओगे इस दुनिया से ऐसे ही खाली हाथ। इसलिए जल्दी आओ अब देर न करो वर्ना काल तुम्हारे सिर पर घूम रहा है और अगर शरीर छूट गया तो बन्दे करोड़ों युगों तक यह मनुष्य-शरीर तुम्हें दुबारा नहीं मिलेगा। *-बाबा जयगुरुदेव, 21 मई 1971*

धीरज, धर्म

धैर्य कब आयेगा? जब हमें धर्म में पूर्ण विश्वास हो। धर्म और धीरज दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। धर्म में ही धैर्य है और धैर्य रखने पर ही धर्म की रक्षा की जा सकती है। इस समय इन्दी दो की आवश्यकता है क्योंकि धर्म चला गया तो मित्र और नारी की क्या बात की जाये?

अपने खोये हुए विश्वास को प्राप्त करने के लिए, अपनी सोई आत्मा को जगाने के लिए, प्रतिकूल परिस्थितियों पर धीरज और धर्म द्वारा विजय प्राप्त करने के लिए हमें सहारा लेना होगा उन महापुरुषों का जो हमको उठा सकें, हम मे वह धर्य दे सकें, धर्म का पाठ पढ़ा सकें। विभीषण को राम का सहारा मिला। उसने रावण के हर अत्याचार को सहन किया। मीराबाई को रैदास जी का सहारा मिला, उन्होंने अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों को सह लिया।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 28 जून 1971)

जयगुरुदेव का संकल्प

16 मई 1971 को अयोध्या के परमहंस जी और बाबा जयगुरुदेव जी की दो घण्टे वार्ता हुई। परमहंस जी ने कहा कि-मैं तो राम का उपासक हूँ। हनुमान की तरह अत्याचारियों का विनाश कर सकता हूँ। लंका को जला सकता हूँ। रावण का संहार कर सकता हूँ, क्योंकि गुरुदेव की तरह क्षमा करने की शक्ति मुझ में नहीं है। बाबा जी परमहंस जी की बातों को सुनकर मुस्कुराये और कहा कि-देश को, समाज को सुधारने का मैंने संकल्प लिया है। केवल आपका सहयोग चाहता हूँ। यों तो यह कार्य संपन्न होकर ही रहेगा। केवल आपको निमित्तमात्र के लिए हनुमान बन जाना है। आपका जो यह संकल्प है कि 'गौहत्या भारत में बन्द करवाऊँगा' तो गौहत्या ही नहीं सभी जीवों की हत्या बन्द कर दी जाएगी।

अन्त में परमहंस जी ने स्वामी जी महाराज को आश्वासन दिया कि उनका पूर्ण सहयोग इस धर्म के प्रचार में होगा और अयोध्या के समस्त साधू उनका साथ देंगे। *-(शाकाहारी पत्रिका: 28 मई 1971)*

बम उतार लिए जायेंगे

लोगों को यह मालूम नहीं है कि अध्यात्म शक्तियाँ भारत में बराबर रहती हैं और वे सब कर सकती हैं। भारतवर्ष पर अब किसी भी विदेशी का शासन नहीं होने पाएगा। जो देश इसको नष्ट करने का प्रयत्न करेंगे वे स्वयं नष्ट जो जायेंगे। पाकिस्तान का नाम-निशान मिट जाएगा। अगर महात्माओं ने आवश्यकता समझी तो उधर से बम आयेंगे और महात्मा इशारे से उसे जमीन पर उतार लेंगे। तब विश्व के लोगों को पता चलेगा कि अध्यात्मवाद किसे कहते हैं। महात्माओं की निगाह में भौतिक प्रगति नाममात्र की हुई है। धर्म ग्रंथों में इस बात का जिक्र है कि लोगों ने 6 महीने तक सूर्य को ढक लिया और अंधकार बना रहा।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 7 सितम्बर 1971)

अब संभल जाओ

अब चरित्रवान व्यक्तियों का ही संचालन देश में रहेगा। उन्होंने कहा कि चरित्र वह दर्पण है जिसमें मनुष्य अपनी आत्मा के प्रकाश को देखता है और फिर उसे अच्छे-बुरे का ज्ञान होता है। यदि किसी देश के मनुष्यों का चरित्र ठीक हो जाये तो उस देश के उठने में क्या देर लग सकती है? किन्तु यदि चरित्र ही न ठीक हो तो वह कभी उन्नति नहीं कर सकता है। भारतवर्ष एक धर्म प्रधान देश है। कभी समय था कि विश्व के देशों को इसने रास्ता दिखाया, नैतिकता का पाठ पढ़ाकर चारित्रिक बल को उठाया था। यही कारण है कि यह देश सोने की चिड़िया के नाम से पुकारा जाता था। मगर आज इस भूमि पर वासना, बेईमानी, हिंसा, चोरी और रिश्वतखोरी का बाजार लगा हुआ है। देश के रक्षक ही यदि देश के भक्षक हो गए तो स्वप्न में भी ऐसे व्यक्तियों से अच्छे संचालन की आशा नहीं की जा सकती।

इसलिए लोग अब संभल जायें। समय आ गया है और कुछ परिवर्तन होगा। इस सन्देश को आप घर-घर में सुना हैं। दूसरों के हक को छीनने की कोशिश न करें। यह पाप है। माँस, मछली, अण्डा, शराब आदि का सेवन करना भी पाप है। इनसे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और इन्द्रियाँ चलायमान हो जाती हैं। फिर मनुष्य को नीचे गिरने में क्या देर लगती है। जिस देश की स्त्रियाँ शराब पीने लगें फिर सोचने की बात है कि उस देश का क्या भविष्य होगा?

सभी नर-नारियों से मेरी प्रार्थना है मेरी बात को मान लें। अखाद्य पदार्थों का सेवन करना छोड़ दें और ईमानदारी से अपना-अपना काम करें। देश की बागडोर अब ऐसे व्यक्तियों के हाथों में आने वाली हैं जो चरित्रवान होंगे और विश्व में एक नया मोड़ लायेंगे।

-बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका: 28 मई 1971)

इतिहास जीवात्माओं का

मृत्युलोक की सभी आत्मायें सत्तपुरुष की अंश हैं। काल भगवान ने वरदान के रूप में जीवात्माओं को सत्पुरुष से माँग लिया है। उनको यहाँ लाकर उसने विधान बनाया। जीव शुभ और अशुभ कर्म करने लगे और फँस गये। बेड़ी चाहे सोने की हो या लोहे कि हो, बेड़ी ही है। अच्छे कर्म करने वाले जीवों को चौरासी और नर्कों में भेज दिया जाता है। उत्पत्ति, पालन एवं संहार का कार्य ब्रह्मा, विष्णु और शिव को दिया गया है।

अब जीव बेचारा क्या करें? वह अनादि काल से यहाँ फँसा हुआ है। मनुष्य शरीर ही एक ऐसा शरीर है जिसमें ऊपर जाने का एक दरवाजा है। अन्य शरीरों में नहीं। इसलिए इसे अनमोल कहा गया है। जब-जब तुम्हें मनुष्य-शरीर मिला तुमने खाने-पीने और दुनिया के भोग भोगने में समय बिता दिया।

सत्तपुरुष ने जब देखा कि जीवात्मायें फँस गई हैं तो उसे दया आई। उसने अपने बोध में एक आत्मा(सुरत) को यहाँ भेजा और कहा कि तुम जाओ और जीवों को कर्म-बन्धनों से छुड़ाकर मेरे पास ले आओ। फिर संत आत्माओं का अवतरण हुआ। कबीर आए, नानक आये, रैदास, मीराबाई, पल्टू साहब, तुलसीदास जी आदि संतों ने मृत्युलोक में आकर जीवों से प्रेम किया। उनके गुनाहों को उन्होंने अपनी दया से माफ किया। संत सर्व और दयालु होते हैं वे सत्तपुरुष के सी.आई.डी. होते हैं। यहाँ के दु:खों, तकलीफों और सुरतों की चीख-पुकार को सुनकर बहुत दु:खी होते हैं और नित्य प्रति उनकी दशा को वहाँ जाकर सुनाते हैं और प्यार से जीवों को अपनी तरफ खींचते हैं। उन्हें गालियाँ मिलती हैं। लोग मारते भी हैं फिर भी प्यार ही करते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि मुझसे रूठकर जाने वाले जीव को कितनी सजा मिलेगी। ''संत की निन्दा नानका, फिरि-फिरि नरके जाए।'' जिन्होंने संतों से विरोध किया वे आज नर्कों में मार खा रहे हैं।

जीवात्मा और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है। जो जाति जीवात्मा की है वही परमात्मा की है। इसमें और उसमें कोई अन्तर नहीं। जीवात्मायें कर्म-बन्धनों से मुक्त करना चाहते हैं फिर उन्हें ले जाकर सत्तपुरुष की गोद में बैठाना चाहते हैं। वे चेला नहीं बनाते हैं, वे कहते हैं कि दो भाई हैं। फर्क केवल इतना है कि एक भाई रास्ता भूल गया है और दूसरा जानता है। तुम उसकी मदद ले लो और अपने घर में वापस चलो। संत जीवों के मददगार होते हैं।

न कोई गुरु ना कोई चेला,
सबमें बोले एक अकेला।

भविष्य का विधान

आगे भारत का राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री कैसा होगा? माँस, मछली, अण्डे एवं शराब, ताड़ी पीने-खाने वाले और रिश्वत लेने वाले मनुष्य प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति नहीं होंगे। प्रान्तों के मुख्यमंत्री भी निरामिष एवं मद्यपान रहित होंगे। एम. पी., एम.एल.ए. भी माँस, मछली, अण्डे, शराब, ताड़ी, अफीम का सेवन नहीं करेंगे। पदाधिकारी वही नौकरी एवं उन्नति पायेंगे जो शराब, ताड़ी, माँस, अण्डे नहीं खाते होंगे तथा रिश्वत भी नहीं लेते होंगे एवं जुआ भी नहीं खेलते होंगे। वह सन् 76 (1976 ई.) के बाद निकाल दिए जायेंगे। उन्हें चाहिए कि ये खाना-पीना अभी से छोड़ दें।

- बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका: 14 जुलाई 1971)

बाबा जयगुरुदेव जी का पत्र

सर्व स्थानों में प्रेमीजनों को जो जयगुरुदेव प्रभु में आस्था, विश्वास करते हैं उनको आदेश दिया जाता है कि जो मार्ग आपने प्राप्त किया व नामदान लिया है, सर्वश्रेष्ठ ऊँचा नाम-मार्ग है। आपको अखण्ड लोक में नाम द्वारा (सुरत-शब्द योग द्वारा) जाना है। आप ऊँची रसाई सुरत-शब्द योग करें। अन्तर में दिव्य दृष्टि खोलकर स्वयं अपने आप व ऊपर की दिव्य विभूतियों, लोकों का दृश्य, आनन्दों, शब्दों व प्रेम का स्वतः अनुभव करें जैसा कि नर-नारी करते हैं। जीवन का मूल महत्व यही है।

भारत के नर-नारियों को जगा दो कोई ग्राम, शहर बाकी न रहे जहाँ जयगुरुदेव की आवाज न हो। दुनिया के मानव-तन धारी मनुष्यों को मालूम हो जाए कि जयगुरुदेव किसका नाम है।

शाकाहारी सदाचारी बालसंघ पत्रिका साप्ताहिक अखबार हर जगह अपनी मेहनत से पहुँचा दो। निराला जन-जागरण पत्र रहेगा। 1971-72 तक बीस करोड़ नर-नारी जाग जायें ऐसी मेहनत करके दिखाओ। आने वाला युग सत्य दिखाई दे। लोगों की अंधकार, अज्ञान भ्रान्ति का पर्दा हटकर चन्द्रमा चमक जाये। दुनिया के मानव प्रकाश स्थित हो जाये। तन, धन, मन लगा दो। चमत्कार को नमस्कार अवश्य होगा।

समय का इन्तजार करो।

सबका शुभचिंतक-
आपका

तुलसीदास

राष्ट्र की उन्नति चाहते हो

समय जीवन का वो आधार है जिसकी पृष्ठभूमि में मनुष्य अपने जीवन के हर उतार-चढ़ाव को देखता है ताकि उसका भूत, भविष्य और वर्तमान संभल कर उसके जीवन के सार को निखार दे। यही विकास है, यही पूर्णता है जो समय की गति के साथ चलकर मिलती है। प्रकृति स्वयं समय का एक ऐसा उदाहरण है जिसमें सूरज और चाँद का निकलना और अस्त होना, ऋतुओं का परिवर्तन सभी कुछ समय की गति के अनुसार चलता है। फिर मानव समाज इस समय की विशेषता से दूर क्यों ? हम जब नजर उठाकर विश्व का अवलोकन करते हैं तो दूसरे देशों के विकास की अपेक्षा अपना देश सौ साल पीछे नजर आता है। अगर अपने पिछड़ेपन के मूल तत्व को देखा जाए तो यह बात स्वयं सिद्ध हो जाती है कि हमारे देश के कर्णधारों और समय की उपयोगिता के बीच हमेशा से विरोधाभास रहा है। परिणाम स्वरूप हम गरीब हो गए। किसानों को उस समय सहायता मिलती है जब वर्षा का आगमन हो जाता है। मजदूरों को उस समय राहत का कार्य मिलता है जब वह जर-जर हो जाता है। विद्यार्थियों को उस समय उनका भविष्य मिलता है जब वे अपने जीवन से मायूस होकर या तो आत्महत्या कर लेते हैं अथवा देश द्रोही हो जाते हैं। सीमा के रक्षकों को उस समय राहत मिलती है जब हजारों बेगुनाह देश के सपूत अपने प्राण न्यौछावर कर देते हैं। यह है देश की परम्परा जहाँ राजकीय कार्यालयों से लेकर दुकानों, कारखानों, बैंकों और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर समय की खुलकर अवहेलना होती है।

समय को खोकर हम कुछ नहीं पा सकते हैं। सभी वर्ग के लोगों को यह सन्देश है कि सत्य का शंखनाद बज चुका है। एक दिव्य पुरुष का सन्देश सुनने को मिलेगा। अब समय आ गया है कि कुछ परिवर्तन होगा। बुरे लोगों के लिए बुरे दिन होंगे और अच्छे लोगों के लिए अच्छा समय आएगा। देश का उत्थान होगा, धर्म की क्रान्ति होगी और बहुत कुछ होगा। एक बार सचेत होकर उस दिव्य सन्देश को सुनें जो तुम्हें तुम्हारा

ज्ञान कराता है। जो सत्य और असत्य का भेद बताकर तुम्हें लक्ष्य दिखाता है, जो समय का ज्ञान कराकर देश का भविष्य संभालता है, जो अत्याचार से बचाकर प्रेम का पाठ पढ़ाता है। यह महापुरुष का सन्देश कि-'राष्ट्र की उन्नति समय के साथ चलकर होगी।' घर-घर, गली-गली, राज्य और देश में गूँजेगा जिससे राष्ट्र देशभक्त हो जायेगा। अगर कल कारखाने, बैंक, दफ्तर और राजकीय कार्यालय समय के महत्व को पहचान गए तो निश्चय ही इस देश की धरती सम्पूर्ण प्रकृति के खजाने को उड़ेल देगी और यह देश धनवान होकर सम्पन्न हो जाएगा। तो अपना लो इस सत्य को, क्योंकि तुम्हें देश के भविष्य का निर्माण करना है और तुम्हें समय के हर पल की कीमत अदा करनी है। अगर चाहते हो स्वाभिमान से जीना, तुम्हारा देश भूखे, नंगे गरीबों से हटकर खुशहाल हो जाए तो व्रत धारण कर लो कि तुम निःस्वार्थ भाव की लाज रखकर देश के भविष्य का निर्माण करोगे।

-स्वामी जी (शाकाहारी पत्रिका- 7 जून 1971)

पत्र-प्रतिनिधियों से अनुरोध

आप भारत के गौरव को ध्यान में रखें। भारत कर्म प्रधान देश है और रहेगा। बहुत लोगों ने चाहा कि हम धर्म को खंदक में फेंक दें और नर-नारियों के साथ स्वच्छन्द भोग-विहार करें तथा किसी योग के साथ करें अथवा धन का संग्रह किसी भाँति भी करें। आप चोरी हिंसात्मक हड़ताल, तोड़फोड़, निन्दा की घटनाओं को लिखें। मिथ्या बातों को बढ़ा-चढ़ाकर मत लिखें ताकि आपकी अखण्डता-स्वतंत्रता हाथ से न जाने पावे। लोकमत में आप शान्ति, प्रेम, सेवा, त्याग, सदाचार की बातों और कार्यों को मान्यता दें। जनता में राष्ट्रभावना, राष्ट्र रक्षा, राष्ट्र भक्ति उत्पन्न हो और लोगों के विचार विकास में लगें। मिल-जुलकर एक ब्रह्म के विश्वास पात्री बनें। अपना-अपना चरित्र सब उठायें और उठाने का प्रचार करें।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 7 जून1971)

निवेदन सम्पादकों और संवाददाताओं से

आधुनिक जगत में मनुष्य हर समय व्यस्त रहता है। इस युग को मशीन युग कहा गया है। यानि जीवन में दौड़-भाग बहुत हो गई और अधिक जानकारी एक-दूसरे के बारे में होना आवश्यक हो गया है। ऐसी स्थिति में अखबार की केवल अन्तर्राष्ट्रीय आवश्यकता नहीं है परन्तु अपने देश के कोने-कोने की जानकारी होना भी आवश्यक है। इस विकास में अखबार का जन्म तथा प्रचार जीवन का एक अंग बन गया है। प्रेम प्रचार का एक महत्वपूर्ण साधन है। निश्चित रूप से समाचार-पत्रों की आवश्यकता आधुनिक युग में है और हर समाचार-पत्रों के सम्पादक तथा संवाददाताओं के कुशल कार्य पर उस पत्र की लोकप्रियता निर्भर रहती है। इस क्षेत्र में जहाँ प्रेस एक महान कार्य में लगा हुआ है वहीं अनेकों छोटे-छोटे अखबारों का भी जन्म हो गया है, जिनके पास सही संवाद आते रहने का साधन नहीं है तथा जनता उनके पत्रों को खरीदे इसलिए सनसनीपूर्ण और अक्सर झूठी खबरें छपती रहती हैं और उनका स्तर भी बहुत गिरा हुआ होता है। समाचार-पत्र सरकार से कुछ अधिकार विशेष रूप से पाते हैं जो जनहित के लिए उनको मिला है। परन्तु अक्सर छोटे-छोटे अखबार उनका दुरुपयोग करते हुए पाये जाते हैं और व्यक्ति विशेष के आग्रह तथा मदद से संस्थाओं तथा व्यक्तियों के चरित्र पर भी झूठी अफवाहें लगाकर जनता को गुमराह करने का प्रयास किया जाता है। हमारा ध्येय है कि भारत में शुद्ध चरित्र का निर्माण हो। परम पिता परमेश्वर के प्रति जन-जन का प्रेम बढ़े और सब लोगों का कल्याण हो। इसलिए हम हर संवाददाताओं से अनुरोध करेंगे कि अपने पत्र छपने के लिए जो भी समाचार भेजे जायें उसकी सत्यता नैतिकता और जन-कल्याण को सामने रखकर कसौटीपर कस करके देख लें कि उन समाचारों से जनता में गलतफहमी तो नहीं पैदा होगी तथा किसी व्यक्ति विशेष और संस्था के साथ उनका व्यवहार न्यायपूर्ण है और उनका आधार सतय पर अवलम्बित है या नहीं। यह अति आवश्यक है कि प्रेस साधन

से जनता में चरित्र-निर्माण हो, शुद्ध प्रेम का प्रकाश जन-जन में बढ़े और अपने राष्ट्र, अपने गौरव, अपनी संस्कृति के अनुरूप अग्रसर होता रहे। इन उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए सत्य का आधार विशेष हितकर होगा। भारत जैसे राष्ट्र में हम प्रत्येक व्यक्ति का आदर करते हैं इसलिए हमारे विधान में आलोचना करने की स्वतंत्रता है और हमारा अनुरोध है कि आलोचना सत्य को सामने रखते हुए करना चाहिए जिससे जनहित हो।

-बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका-14 जून 1971)

स्वामी जी का पत्र

सत्संगी अभी से ब्रह्मचर्य का पालन दिसम्बर तक करें, इस पर ध्यान जरूर दें। मैं स्वयं लिख रहा हूँ। सत्संगी समझ लें कि उनके लिए यह चार माह की आध्यात्मिक तपस्या है। स्त्री-पुरुष पूर्ण संयम से रहें। सुरत-शब्द की साधना में लीन होकर अन्तर जगत की गुप्त शक्तियों को प्रकट करें और ध्यान द्वारा शिवनेत्र खोलें।

मदिरा, माँस व अण्डे खाना पाप है। सत्संगी उन लोगों से दूर रहें जो माँस, मछली खाना, हत्या करना नीच कर्म हैं। अण्डे मासिक पक्षियों की गलीज खून है। कणमात्र रज-वीर्य हैं पर दोनों गन्दे पेशाब की नली से निकलते हैं। माँसाहारियों को कुछ दिनों में प्रकृति सजा देने वाली है। बच्चों को अण्डे मत खिलाओ वरना तुम्हें भी रोना होगा। जो दूसरों के बच्चों को रुलाते हैं वह खुद भी रोते हैं।

- बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका: 21 जुलाई 1971)

मैंने कहा था

मैं बहुत पहले से कह रहा हूँ कि आगे देश के अधिकांश राज्यों में राष्ट्रपति शासन होगा। आपने कई राज्यों में राष्ट्रपति शासन होते देखा और आगे भी देखेंगे। मैं जो कह रहा हूँ वह अक्षरशः सत्य होगा। मैंने सन् 54 (1954) में इलाहाबाद (प्रयागराज) में कह दिया था कि सन् 72 के अन्दर कांग्रेस समाप्त हो जायेगी, जो आप देख रहे हैं। कांग्रेस का निशान खत्म हो गया। यही नहीं ये जो नई कांग्रेस बनी है सन् 76 के बाद वह भी समाप्त हो जायेगी। यह आपको देखने को मिलेगा। मैं सन् 72 तक देश में बीस करोड़ नर-नारियों का जागरण कर दूँगा जो एक विचारधारा के सूत्र में बंधे होंगे। मेरा मुख्य काम है आपका शिवनेत्र खोलकर आपको जीते जी स्वर्ग, बैकुण्ठ में पहुँचाना और राम, कृष्ण का दर्शन कराना। शिवनेत्र खोलने का मार्ग महात्माओं से मिलेगा। परन्तु शिवनेत्र खोलने के पहले सदाचार का पालन करना आवश्यक है। आपको माँस, मछली, अण्डा, शराब, गाँजा, भाँग, अफीम का प्रयोग छोड़ना होगा तब आप शिवनेत्र पा सकेंगे।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 21 जून 1971)

महात्मा ही एकमात्र सहारा

अगर ऐसे समय में सहारा है तो केवल धर्म का है और वे महापुरुष हैं जिनकी साया में बर्दाश्त मिलती है, त्याग भावना आती है, सेवा की भावना आती है, उस परमात्मा पर और अपने भाग्य पर विश्वास आता है और सारे सुख-दुःख को कर्म-फल मानकर सहन करने का साहस उत्पन्न होता है।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 21 सितम्बर 1971)

देश का दुर्भाग्य

सब लोग जानते हैं कि चुनाव के समय 5 लाख, दस लाख, बीस लाख रुपया बाँटा जाता है। विधान सभाओं के लिए लाखों रुपये से ऊपर खर्च होता है। लड़ाई, झगड़े, ईर्ष्या-द्वेष की मात्रा सीमित हो चुकि है। जुआ, माँस, अण्डों, शराब-ताड़ियों का रूप आँधी की तरह हुआ। बच्चे-बच्चियों को भी शराब पिलाई जा रही है। कँवारी लड़कियों को शराब दी जावे तो क्या असर उनके चरित्र पर होगा?

रिश्वत का पूर्ण खुले आम बोलबाला है। किसी भी बच्चे को बिना रिश्वत के नौकरी नहीं मिलती है। कोई कार्य बिना रिश्वत के नहीं होता है।

स्वामी जी ने आगे कहा कि-यह देश का महान् दुर्भाग्य है। इससे देश की आर्थिक व्यवस्था अति कमजोर हो जायेगी। हमारे देश का दुर्भाग्य है जो आज 22 वर्ष में भी लोगों के चरित्र न उठ सके। शिक्षा की कमी होने से लोग अनुशासनहीन हो गये। धर्म के आधार पर ही अनुशासन रह सकेगा। बिना धर्म के मनुष्य पशु है। धर्म, प्रेम, ज्ञान, आनन्द, को कहते हैं। जहाँ प्रेम है वहीं शान्ति है। लोगों ने धर्म का अर्थ जाति-पाति, हिन्दु-मुस्लिम लगाया। इसी से देश का बुरा होल हो रहा है। वास्तविकता की खोज करना चाहिये। खान-पान का असर सर्वदा बुरा ही रहेगा। ध्यान रहे जो माँस, मछली, अण्डे खायेगा और शराब, ताड़ी, गाँजा, अफीम पियेगा उसका चरित्र कभी अच्छा रह ही नहीं सकता। वे लोग भूले हैं जो ऐसों पर विश्वास करते हैं।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 7 जुलाई 1971)

भविष्य में शासन की बागडोर धार्मिक लोगों के हाथों में होगी और सर्वत्र सम्पन्नता छा जायेगी।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 7 नवम्बर 1971)

गुरु सब कुछ जानता है

गुरु हाड़-माँस का पुतला नहीं है। वह एक चेतन शक्ति है, जो कण-कण में व्याप्त है। गुरु का स्वरूप हर मण्डल पर मिलता है और वह सब कुछ जानता है। साधना करने वाले उधर जब गुरु को पाते हैं तो प्रसन्नता से फूले नहीं समाते। जो इधर उपदेश देता है वो उधर भी मिलता है और मरने के बाद जीवात्माओं की रक्षा करता है।

ऐ किराये के मकानों में रहने वाली जीवात्माओं! तुम महात्माओं के समीप आओ। उनसे नाम-भेद लेकर ऊपर के लोकों में चलो। उधर ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, आद्या महाशक्ति, ईश्वर, ब्रह्म सभी मिलेंगे। बाल्मीकि ने जीते जी ब्रह्म को प्राप्त कर लिया था। नारद जी बराबर ब्रह्मलोक, शिवलोक में भ्रमण किया करते थे और फिर मृत्युलोक में चले आते थे। इस पंच भौतिक शरीर से तुम इन लोकों में नहीं जा सकते हो। जब तुम्हारी दिव्य आँख खुलेगी तभी यह सब काम बनेगा। तुम आओ, मैं यह काम करता हूँ। तीसरी आँख खोलने का डॉक्टर हूँ। यह बात कहने में कोई हर्ज नहीं है।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 28 अक्टूबर 1971)

बच्चों को नोकरी मिलेगी

बच्चे घबरायें नहीं, सबको नोकरियाँ मिलेंगी। आजकल बगैर घूस दिये कोई काम नहीं मिल पाता है। भविष्य में घूस का लेना-देना बन्द हो जायेगा। इस समय मेरी बातों को मान लें। माँस, मछली, अण्डे, शराब आदि का सेवन तुरन्त बन्द कर दें और महात्माओं के निकट आयें। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो उन्हें कुदरत की तरफ से सजा मिलेगी। शाकाहारी बच्चे ऊँचा से ऊँचा स्थान प्राप्त करेंगे। अधिकारीगण जो लोग माँस, मछली, अण्डे, शराब, अनैतिक कार्य नहीं छोड़ेंगे वे आने वाले समय में नोकरियों से निकाल दिये जायेंगे और उनके स्थानों पर शाकाहारी बच्चे नियुक्त होंगे।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 28 जुलाई 1971)

सच्चे प्रजातंत्र की रक्षा महात्मा करेंगे

गड़बड़ तंत्र को कौन मिटायेगा? महात्मा निरामिष शाकाहारी व सदाचारी होते हैं। माँस, मछली, अण्डे, शराब और ताड़ियों की भरमार ने मानव-चरित्र को निचोड़ लिया है। कुबुद्धिहीन मानव ने लूटपाट, डकैती, चोरी, निंदा, कत्ल, झूठ, धोखा, छल, ईर्ष्या, द्वेष, मान तथा क्रोध को अपना लिया। स्वार्थी तनाव ने मानव को भ्रान्ति में डालकर आन्दोलन, हड़ताल, तोड़फोड़, रिश्वत तथा अन्याय का रूप बनाकर प्रजातंत्र को गड़बड़ तंत्र की पोशाक पहना दी है। इस प्रजातंत्र में प्रजा हाहाकार मारने लगी। अनेक प्रकार की चीखें लगाने लगी। प्रजातंत्र में मानव ने अपने निकटवर्ती सेवा, त्याग, समानता, आदर्श एवं दूसरों के सम्मान को खो दिया। खुद सम्मान कराने की भूख जागने लगी। पति-पत्नी के छल-कपट ने भीषण भेदभाव पैदा किया। भाई पड़ौसी, जाति, समाजों के मतभेद व पार्टियों के स्वार्थी संघर्षों ने प्रजातंत्र को रसातल में पहुँचाकर अनेक राज्यों में राष्ट्रपति शासन करा दिया। अब आपको महात्माओं के पास आना ही होगा। बिना धर्म-गुरुओं के तुम्हारा और देश का कल्याण नहीं है। बुराई मत करो। सच्चाई प्रकट होने पर तुम्हें शर्म लगेगी।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 21 जुलाई 1971)

सन्त वचन

इस समय काल की धार चल रही है। उतनी दयालु धार भी उसमें काम कर रही है, जो सन्तों के निकट आते हैं। अब दोनों में आगे देखो कौन रहता है। दुनिया का यह हेरफेर है, जैसा होगा, वैसा होगा लेकिन दोनों धार पूरा का कर रही हैं।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 7 नवम्बर 1971)

थोड़ी प्रतीक्षा करें

मैं इन्दौर में सत्संग कर रहा था। 10 प्रेमियों की नगर में रात्रि फेरी निकाली। अगम्य फेरी शहर की सड़कों, दुकानों, मंजिलों में रहने वाले नर-नारियों, बच्चों में कौतुहल, कोलाहल का विषय बन गई। माँस, मछली, अण्डे, शराब, ताड़ी, गाँजा, भाँग, अफीम न खायेंगे, न पियेंगे। आन्दोलन, हड़ताल, तोड़फोड़ नहीं करेंगे, रिश्वत नहीं लेंगे, किसी पार्टी की निन्दा नहीं करेंगे, अनैतिक कार्यों से दूर रहेंगे।

'जयगुरुदेव' नाम भगवान का है, यह नारा नर-नारी लगाते हुए शहर की सम्पूर्ण सड़कों पर चलते रहे, जो मीलों भरी थी। यह हलचल सुनकर सारे शहर में 'जयगुरुदेव' की चर्चा होने लगी। लोग आपस में बात करने लगे कि गऊ काटना बन्द कर दिया जायेगा, राष्ट्र भाषा हिन्दी-संस्कृत कर दी जायेगी। परिवार नियोजन कृत्रिम बन्द कर दिया जायेगा। भारतवर्ष के सनीमें (सिनेमा) बन्द कर दिये जायेंगे। माँस, मछली, अण्डों की दुकानें बन्द कर दी जायेंगी। पुलिस का वेतन 300/- कर दिया जायेगा, मास्टरों को 8/-रु. रोज मजदूरी कारखानों में मिलेगी, पेशकारों, क्लर्कों का वेतन 300/-कर दिया जायेगा और किसानों का आधा कर्ज माफ कर दिया जायेगा।

एक सम्पादक महोदय आगे आये और बोले कि मैं महात्मा जी से मिलना चाहता हूँ। परिचय पूछने पर उन्होंने बताया कि मैं सम्पादक हूँ। इतने में मैं पहुँच गया और उनका स्वागत किया और प्यार से मैंने कहा कि आइए, बिराजिए। सम्पादक जी ने कहा कि-मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। मैंने कहा कि आप पूछिए। सम्पादक जी मुझसे बोले कि आपका उद्देश्य क्या है?

मैंने उन्हें बताया कि-मेरा उद्देश्य है माँस, मछली, अण्डे, शराब, ताड़ी, आन्दोलन, हड़ताल, तोड़फोड़, रिश्वत, निन्दा, चोरी-चमारी, सनीमा, गऊ काटना, परिवार नियोजन, स्त्री नग्न नाच, जुआ, चुनाव में रुपया खर्च करना बन्द हो। लोग अपने चरित्र को उठायें। परस्पर आपस में प्रेम हो, आपस में दूसरे के काम आयें। चरित्र शुद्धि के बाद आत्म-कल्याण करें।

सम्पादक जी बोले कि यह सब कब तक हो जायेगा? इस पर मैंने उन्हें समझाया कि समय से होगा, थोड़ी प्रतीक्षा करें।

-बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका: 21 जुलाई 1971)

विदेशी दूषित अन्न से भारतवासियों का नैतिक पतन

मनुष्य जैसा अन्न खाता है वैसा ही उसका मन होता है। एक आदमी का नियम था कि बिना किसी को भोजन कराए भोजन स्वयं ग्रहण नहीं करता था। एक बार मैंने उसके यहाँ भोजन किया। खाने के बाद ऐसा मालूम हुआ कि मानो तन-बदन में आग लग गई है। मन खराब हो गया, भावनायें दूषित होने लगीं। इन्द्रियाँ चलायमान हो गईं। संयम-नियम से मन दूर भागने लगा। इस परिवर्तन का देखकर मैं खुद घबरा गया कि मुझे क्या हो गया? मैं बड़ी देर तक विचार करता रहा कि मेरी साधना कहाँ चली गई? उस समय मैं साधना किया करता था। मैंने उस सज्जन से अनेक प्रकार के प्रश्न किया, जिसने खाना खिलाया था। अंत में मालूम हुआ कि गेहूँ, जिसकी रोटी बनी थी वह चोरी का था। तब मैंने सोचा कि अन्न का असर इतना बड़ा होता है। विदेशों से प्राप्त अन्न जो दान के रूप में हो अथवा अन्य किसी रूप में, वह सूक्ष्म रूप से असर करता है। जिन भावनाओं से यह अन्न विदेशियों ने दिया है उसके सेवन से भारतवासियों का ईमान-धर्म सब कुछ विदेशियों जैसा हो गया। अब इन्सान के वश की बात नहीं कि वह सुधार कर सके। इसलिए यदि देश को बचाना है तो महात्माओं को मैदान में आना होगा तभी सुधार हो सकता है।

-बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका: 7 सितम्बर 1971)

धर्माचार्यों, राजनीतिज्ञों को नेक सलाह

धर्म तक आयेगा जब सब धर्म के लोग लड़ना छोड़ें। राष्ट्र की उन्नति तभी होगी, जब राजनैतिक लोग लड़ना, आन्दोलन, हड़ताल, तोड़फोड़, रिश्वत अथवा स्वार्थ एवं दल बदल छोड़ दें। माँस, मछली, शराब, ताड़ी भी छोड़ दें। इसके पहले देश की खुशहाली की जो बात करता है वह भविष्य के आने वाले संकट से बदहोश है। वह यह नहीं जानता है कि देश की प्रजा दुराचारी, चरित्रहीन, लड़ने-भिड़ने व कामचोर, हड़ताली, आन्दोलन, तोड़फोड़ करने वाली हो गई है। माँस, मछली, अण्डों का भक्षण करने लगी। शराब, ताड़ी व अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन से प्रजा बदहोशी में आकर पागल बनकर कुत्तों की भाँति लड़ने लगी। वह देश की जनता अपनी गरीबी को कदापि नहीं मिटा सकती है।

-बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका: 28 जुलाई1971)

औतारी शक्तियों का जन्म हो गया है

भारतवर्ष में औतारी शक्तियों ने जन्म ले लिया है। अनेक स्थानों पर वे बच्चों के रूप में पल रहे हैं और समय आने पर प्रकट हो जायेंगी। माता-पिता अपना सुधार कर लें वर्ना यही बच्चे उनके विनाश का कारण बन जायेंगे। इन बच्चों को गोश्त व अण्डा दिया जाता है तो वे मुँह फेर लेते हैं और उधर देखते तक नहीं। माँ-बाप इस बात का ध्यान रखें कि जो बच्चे इस चीजों को खाना नहीं चाहते उन्हें जबरदस्ती न खिलायें। वह औतार जिसकी लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं बीस वर्ष का हो चुका है। यदि उसका पता बता दूँ तो लोग पीछे पड़ जायेंगे। अभी ऊपर से आदेश बताने के लिए नहीं हो रहा है। मैं समय का इन्तजार कर रहा हूँ और सभी महात्माओं ने समय का इन्तजार किया है। समय आते ही सबको सब कुछ मालूम हो जायेगा।

-बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका: 7 सितम्बर 1971)

उच्च पदाधिकारियों से अपील

देश में राष्ट्रभक्ति, समाज भक्ति, काम शक्ति लोगों के शरीर से जाती रही। हर स्थानों में काम नहीं हो रहा है। दस मिनट के काम को लोग चार साल लगा देते हैं। माँस, शराब, रिश्वत के कारण प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र गिर गया है। हर आदमी स्वार्थ का पत्थर बन चुका है। देश के काम, व्यवहार, सदाचार, न्याय, विचार की व्यवस्था बिगड़ गई है। जब जीवन प्रायः सबका संकट, अशान्तिमय हो गया इस दशा के सुधार में सबसे बड़ा योगदान अधिकारियों से चाहता हूँ। मैं आशा करूँगा कि बड़े अधिकारीगण माँस, मछली, अण्डे, शराब, ताड़ी, रिश्वत छोड़ेंगे तो आपको देखकर छोटे लोगों पर बड़ा असर पड़ेगा और आपके प्रति लोगों में श्रद्धा बढ़ जायेगी।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 28 जुलाई 1971)

सत्संग में आओ

सभी नर-नारियों, बच्चों को सत्संग की आवश्यकता है। सत्संग के बिना कर्म, धर्म, सेवा, दया, प्रेम की जानकारी नहीं होगी। जब से संतों, सज्जनों एवं बड़ों का सत्संग छोड़ा और सनीमों का संग किया तब से लोगों का क्या हाल है आप जानते हैं? सनीमा बच्चे-बच्चियों का बड़ों के चरित्र गिराने और सब बदमाशियों के लिए नहीं बल्कि चोरी, डकैतियों, अनैतिकताओं, शराब, माँस, नर-नारियों के नग्न रहने के पूर्ण साधन बने जिन्होंने ऐसा योगदान अपना दिया कि शर्म, लज्जा सबकी आँखों से चली गई। ऐसी आदत पड़ गई कि चोरी करके भी सनीमा देखता है। बच्चा प्रथम चोरी घर से सीखता है। जब कड़ाई होती है तब बाहर चोरी करता है।

माता-पिता से प्रार्थना है कि आप स्वयं सत्संग में आवें, बच्चों का सुधार अपने आप हो जायेगा। राष्ट्र के लोगों को बच्चे के सुधार पर पूरा ध्यान देना है।

- बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका: 28 जुलाई 1971)

जयगुरुदेव

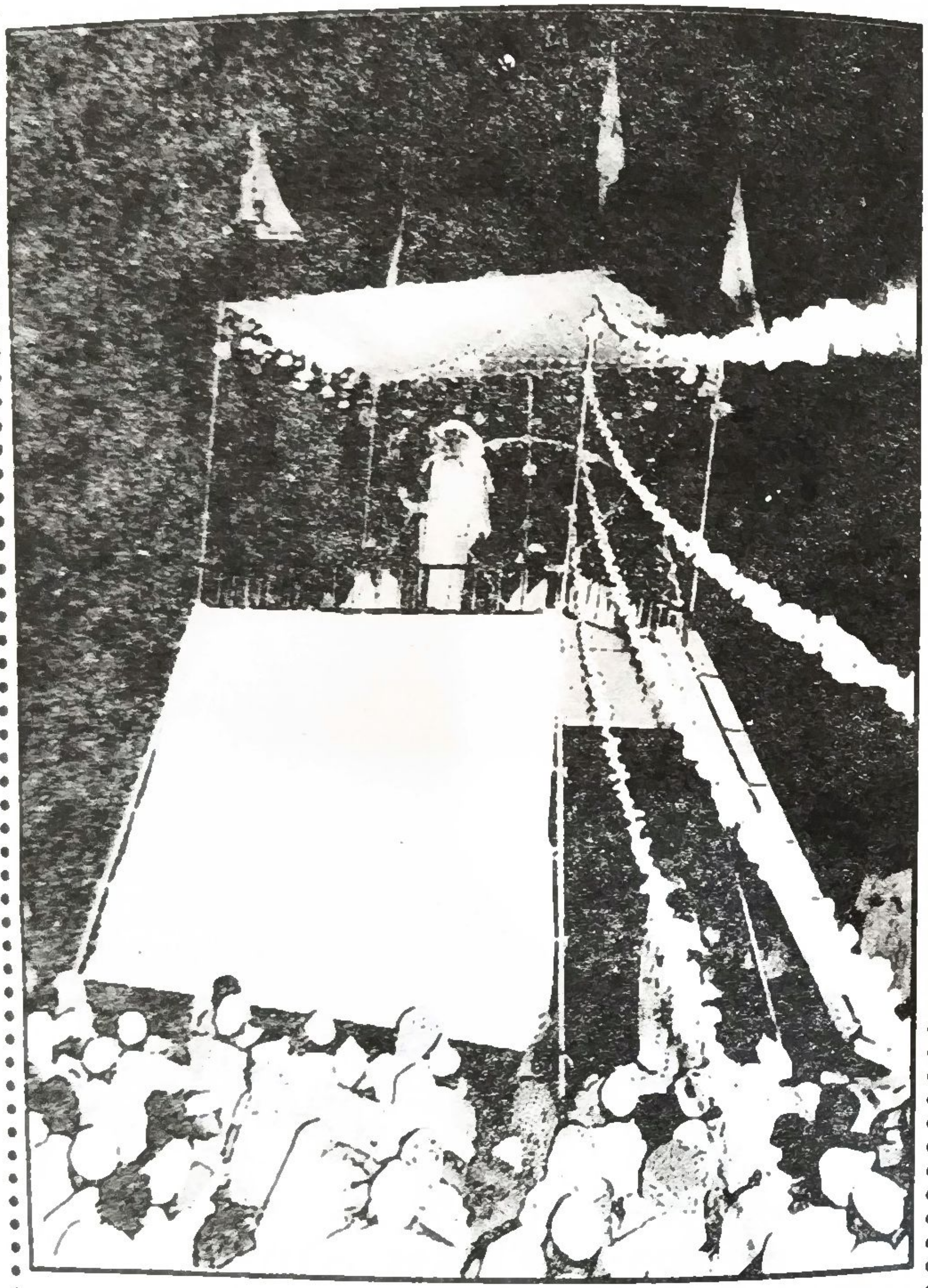

प्रेमियों को सम्बोधित करते बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

भूत-भविष्य की जानकारी

यदि वास्तव में आत्मा की शक्ति को प्राप्त करना है तो मनुष्य रूपी शिखर पर आत्मशक्ति जगाने का द्वार है। अपना ज्ञानचक्षु खोलो और ऊपर की तरफ देखो तो मालूम होगा कि कितनी बड़ी शक्ति का विकास चारों तरफ फैला है। यदि सुरत (आत्मा) इसका दर्शन कर ले तो सभी शक्तियाँ सुरत को प्राप्त हो जाती हैं, जिससे कि मानव-तन में सभी ज्ञाननिधियों का भण्डार प्राप्त हो जाता है। फिर क्या! वस्तु योगियों का असंभव है, संभव असंभव हो जाता है। अन्दरूनी मार्ग द्वारा जो सुरतें अन्दर ऊपर के लोकों में जाती हैं तो वो देखती हैं कि अलग-अलग शक्तियों के भण्डार हैं। हर शक्तियों के अलग-अलग स्थान हैं। बिरले साधू-संत होते हैं जो इन सभी स्थानों की शक्तियों को प्राप्त कर पाते हैं।

कुछ लोग छोटी-मोटी साधना करने वाले प्रेत आदि की सिद्धि कर दुनियाँ में चमत्कार दिखाते हैं, उनकी आत्माओं का कोई कल्याण नहीं होता है, बल्कि नर्कों को जाते हैं और ऊपर के लोकों की साधना करने वाले नीचे की किसी शक्ति से टकराकर अपनी साधना सम्पन्न कर लेते हैं और समझते हैं कि हम सिद्ध हो गये और कुछ ही दिनों में उनकी साधना शक्ति घटकर उसी तरह अपनी अवस्था में आ जाती है जैसे कुछ भी नहीं है! साधक को चाहिए अन्दरूनी साधना के सहयोग के लिए गुरु की कृपादृष्टि माँगते रहें और अन्दरूनी हर शक्तियों के मण्डलों की जानकारी की याचना करता रहे क्योंकि आँखों की शुरूआत से सहस्रदल कवँल के नीचे अनेक शक्तियों के मण्डल हैं। बिना गुरु की मदद के इन शक्तियों के मण्डल को भेदन नहीं कर सकतें हैं और सहस्रदल के अधिशासी पुरुष निरंजन को नहीं देख सकते हैं। जब तक सहस्रदल कवँल में निरंजन भगवान के दर्शन साधक नहीं करेगा तब तक किसी भी लोक की शक्ति साधक को गिराकर चौरासी में ले जा सकती है। इसलिए हर एक साधक को चाहिए कि गुरु-आज्ञा का पालन करे और अपने को दीन-हीन समझ कर सदैव साधना में लगे रहे। सहस्रदल कवँल के नीचे चौदह लोक हैं, जिनमें छोटे-छोटे बहुत से लोक समाये हैं। इन चौदह लोकों में मुख्य शासन ब्रह्मा, विष्णु, महेश का है। इनकी देखरेख के लिए आद्याशक्ति अपने लोक में

विराजमान है, जिसे आद्या शक्ति का लोक कहते हैं। वहाँ से मृत्युलोक की हर वस्तुयें दिखाई देती हैं। साधक सतर्क रहे, इस मृत्युलोक में क्या-क्या होगा और क्या हो रहा है, भूत, भविष्य, वर्तमान की सब जानकारी इस साधक को प्राप्त हो जाती है। अज्ञान, अल्पज्ञ व्यक्तियों के सामने जब साधक अनहोनी घटना का वर्णन कर देता है तो उस घटना के सिद्ध होने पर लोगों में उसके प्रति बड़ी श्रद्धा और भाव-भक्ति जागृत होती है। लोग उस साधक को घेरना शुरू कर देते हैं तथा चाहते हैं कि साधक द्वारा हमारे दुनिया के नाशवान कार्य पूरे हो जायें। साधक उस प्रतिष्ठा में फँस जाता है और अपनी की हुई साधना की तरफ से धीरे-धीरे गिरने लगता है। साधक को चाहिए कि जो मार्ग गुरु ने जहाँ तक पहुँचने का बताया है, जब तक वहाँ तक की सफलता पूरी न मिल जाये इस प्रकार के कार्य जगत में न करे।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 28 जुलाई 1971)

देश में बहुमत का राज्य नहीं

देश में बहुमत का राज्य नहीं है। यदि भारतवर्ष की आबादी साठ करोड़ है तो इसमें से पन्द्रह करोड़ बच्चों और मुसलमानों को निकाल दिया जाए तो पैंतालिस करोड़ लोग बच जाते हैं। पिछले चुनाव में वोटरलिस्ट सताइस करोड़ की थी। इसमें से कुल वोट चौदह करोड़ पैंतालिस लाख पड़ा, जिसमें छः करोड़ शासक वर्ग को मिला और आठ करोड़ पैंतालिस लाख विरोधी दल को वोट प्राप्त हुआ। अब आप ही सोच लीजिए कि जनता की विचारधारा कितने प्रतिशत लोकतंत्र की ओर है और इस क्रम में कितने दिनों तक चलते रहने की संभावना है।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 7 सितम्बर 1971)

प्रजातंत्र को समझें

जनता लोकतंत्र में प्रजातंत्र को अच्छी तरह जान चुकि है। अच्छे व गरीबों का प्रजातंत्र नहीं है। जिनके पास एक लाख से पन्द्रह लाख तक रुपये खर्च करने को होगा या इनकी पार्टी खर्च करने को देगी, सदाचारी, निरामिष, मद्यपान रहित, निर्धन व्यक्तियों का अधिकार वोट पाने का नहीं क्योंकि वह धनहीन है। रुपये के अनैतिक प्रहारों ने प्रजातंत्र के मतदाताओं को लोभी कुत्तों की भाँति लड़ने वाला और भिखारी की भाँति हाथ फैलाकर दो रुपये में भारत की प्रजातंत्र वोट बेचते हुए अनेक स्थानों पर पाया गया है। रुपये की चलती-फिरती रूखड़ी माया ने प्रजातंत्र के भूखे मनुष्यों को ईमान से विचलित कर शराब, ताड़ी, माँस, मछली, झूट, ईर्ष्या, छल-कपट, डकैती, कत्ल, रिश्वत के बाजार को चना जोर की तरह गर्म कर दिया है। गाली-गलौच, लड़ाई-झगड़ा, परनारी हरण, निंदा, आन्दोलन, हड़ताल, तोड़फोड़, पति-पत्नी मन-मुटाव, भाई-भाई झगड़ा, धर्म-धर्म के लोग लड़ें, साधू-महन्त लड़ें, संस्थायें-संस्थायें लड़ीं, पार्टियों-पार्टियों के भीषण संघर्षों ने प्रजातंत्र को महान् भ्राँति की आँधी में उड़ा दिया। प्रजातंत्र अपना न समझकर राज्य नियम का उल्लंघन करने लगे। कामचोरी सिखा दी। देशभक्ति, समाज-सेवा, बड़ों का आदर एवं अपने चरित्र से प्रजातंत्र लाखों कोस दूर हो गया। मानसिक, शारीरिक, आत्मिक, पारिवारिक संतुलन प्रजातंत्र का बिगड़ा परिणाम स्वरूव प्रजातंत्र में भौतिक भोगी वस्तुओं की तीर्व इच्छा जगी। इच्छानुसार प्रजातंत्र ने मानव-विषयों के भोगों में कुत्ते की सूखी हड्डी की भाँति चूसकर मानव प्रजातंत्र के रस से तृप्त करना चाहा और हुआ नहीं तो धर्म, कर्म, देवी-देवता, वृद्ध, विद्वानों, सत्य, अहिंसा, सेवा, समानता के व्रत से गिरकर अनेक बाधाओं में फँसकर रोने लगे।

जब साधू इस प्रजातंत्र के संतुलन रखने वाले न मिलें तो प्रजातंत्र मानव बुराई-अच्छाई न समझ अच्छाई को छोड़कर बुराई में जा गिरा। फलस्वरूप जब महात्मा आये तो दुखियों के दुःख को दूर करके, प्रेम देने, बुराई छुड़ाने, माँस, मछली, अण्डे छुड़ाने, शराब, ताड़ी, अफीम, गाँजा, भाँग, चोरी, आन्दोलन, हड़ताल, तोड़फोड़ छुड़ाने तो भौतिक भोगी इन्द्री

स्वादी घबराकर तुरन्त महात्मा को गाली देने लगे। अनेक असत्य भद्दे शब्दों का उच्चारण करने लगे परन्तु पूरे महात्मा सबकी सहते हैं।

आप प्रजातंत्र में कुछ भी कहोगे महात्मा सब पिता की तरह सहन करते हैं और करेंगे। समय बदलेगा, सुख शब्द का मार्ग प्रापत कर ऊपर के लोकों में सुरत जायेगी। महात्मा धर्म के साथ-साथ आपको भौतिक भोगी असली शुद्ध, साफ वस्त्र पहनाना चाहते हैं जिससे मानव प्रजातंत्र में सुख और शान्ति को पाले और अन्त में मरने के समय आत्मा का उत्थान कर ले।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका-7 अगस्त 1971)

भारत का अखण्ड राज्य होगा

भारत पर किसी विदेशी का शासन नहीं रहेगा। भारत अखण्ड राज्य होगा। ऐसा संभव हो सकता है कि दूसरे देश वाले यहाँ भारत में गोले बरसा दें जिससे नई-नई बीमारियाँ फैल जायें और करोड़ों लोग मर जायें। ऐसा भी हो सकता है कि सभी लोग आपस में मर जायें और काफी जनसंख्या समाप्त हो जाये या भूचाल आये और इमारतें 40-40 फिट ऊपर आसमान में उछलें और लोग दबकर मर जायें। यह सभी संभव है परन्तु अब भारत के ऊपर किसी दूसरे देश का शासन नहीं हो सकता।

भारत राम और कृष्ण की भूमि है। इस तपोभूमि में रहकर जो लोग आतंक पैदा करेंगे, अन्याय करेंगे, जनता के पैसों को अनैतिक रूप से जमाकर सुख और आराम की कल्पना करेंगे। माँस, मछली, अण्डा, शराब का सेवन करेंगे उनके लिए आगे एक ऐसा समय आ रहा है कि आदमी को आदमी उठाने वाला नहीं मिलेगा। आगे जो तकलीफें आ रही हैं उन्हें कोई मेट नहीं सकता। यदि पृथ्वी के कण-कण में सोना बरसा दिया जाये तब भी लोगों को सुख न मिल सकेगा। यह तकलीफ व्यक्तिगत रूप से होगी और कर्मानुसार होगी।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 28 सितम्बर 1971)

दिल्ली की भूमि का असर

दिल्ली की गद्दी पर बैठकर कोई भी माई का लाल भारत की जनता को सुखी नहीं कर सकता। इस भूमि पर सदा ही अत्याचार, अनाचार हुए हैं और यह इस भूमि का असर है कि लोगों के आचार-विचार ठीक नहीं रह सकते। बुद्धि-विवेक नहीं रह सकता और वे जनता की भलाई का कोई भी कार्य नहीं कर सकते। इस भूमि में बैठकर सेवा, त्याग, समानता, प्रेम को नहीं पाया जा सकता है। इस नगरी में प्रवेश करते ही मनुष्य के विचार बदल जाते हैं और वादा कुछ करता है और करता कुछ है। इसमें किसी का दोष नहीं।

त्रेता युग में श्रवण कुमार अपने अंधे माता-पिता को जब कंधे पर लादकर भारत के तीर्थ स्थानों की यात्रा करा रहे थे तो घूमते-घूमते दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) नगरी के यमुना के किनारे पहुँचे। इनके सेवा, त्याग, समानता, मातृ-पितृ भक्ति की चर्चा आज भी लोग किया करते हैं। यमुना के तट पर उन्होंने कांवर को कंधे से उतारा और उसमें बैठे हुऐ माता-पिता से बोले कि मैं बहुत थक गया हूँ। मेरी हिम्मत नहीं हो रही है कि आप लोगों को और आगे ले चलूँ। और भी बहुत सी बातों को उन्होंने सुनाया। फिर उनके पिता बोले कि बैटा! हम लोग कहाँ पर हैं? यह सुनकर श्रवण कुमार ने जवाब दिया कि हम दिल्ली में प्रवेश कर चुके हैं। पिता बोले कि बेटा! मेरा इतना कहा और मान लो और दिल्ली के पार मथुरा के रास्ते पर हम लोगों को छोड़ देना। खैर श्रवण कुमार ने सोचा कि अब तक इतनी सेवा जान लगाकर की है तो इस आखिरी बात को क्यों न मान लिया जाये। उन्होंने बहगी (जिसमें माता-पिता बैठे थे) को उठाया और चल पड़े। फिर भी रास्ते में कुछ न कुछ बोलते ही जाते थे जिसे सुनकर मां-बाप चुप थे। कुछ देर बाद चाल में कुछ तेजी आ गई तो पिता ने पूछा कि बेटा! हम अब कहाँ हैं? इस पर श्रवण कुमार ने उत्तर दिया कि पिता जी! हम दिल्ली को पार करके मथुरा की तरफ चल रहे हैं। पिता जी ने कहा कि बेटा! हम दोनों को यहीं छोड़ दो। इस पर श्रवण कुमार ने बड़े विनीत भाव में जवाब दिया कि पिता जी! आप कैसी बातें कर रहे हैं? मुझे किंचितमात्र भी थकावट नहीं है और मथुरा पहुँचकर ही विश्राम किया जायेगा। मां-बाप ने सोचा

कि-अरे! दिल्ली की भूमि का यह असर जिसने हमारे आदर्श बेटे के विचारों में इतना क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया। फिर उन लोगों का क्या हाल होगा जो यहाँ दिन-रात रहते हैं।

-बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका-28 अगस्त 1971)

पक्षियों का अण्डा गलीज खून

अण्डा पक्षियों का गलीज खून है, जिसे लोग आमलेट बनाकर खा जाते हैं। हमारे धर्म में लोग स्त्रियों से ऐसे समय में परहेज करते हैं किन्तु इन्सान अपनी बुद्धि को इतना बेच चुका है कि उसे जरा भी ध्यान नहीं और वह पक्षियों के इस गन्दे खून को खा जाता है। स्वाभाविक रूप से खून गर्म हो जाता है और आदमी की निगाहों में यह विवेक नहीं रह जाता कि कौन मेरी स्त्री, कौन बहन, कौन मां है। आँखें बराबर चलायमान रहती हैं। अण्डा, माँस, शराब का सेवन करने वाले का भूलकर भी विश्वास नहीं करना चाहिए। उन्होंने अपने लिए नरक का द्वार खोल लिया है। महात्माओं ने इस सम्बन्ध में अपना फैसला सुना दिया है। कबीर साहब ने कहा है-

तिलभर मच्छी खाय कर, कोटी गऊ दे दान।
काशी करवट ले मरे, निश्चय नरक निदान।।

मैं लोगों को बराबर आगाह करता आया हूँ कि इन अखाद्य वस्तुओं का सेवन छोड़ दें वर्ना यहाँ पर भी वही स्थिति आएगी जो पाकिस्तान में हुई है। और वह यह कि आदमी को आदमी उठाने वाला नहीं मिलेगा और लोग कुत्तों की मौत मारे जायेंगे।

- बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 7 सितम्बर 1971)

परिवर्तन का कारण भारतवर्ष बनेगा

भारतवर्ष को विश्व में परिवर्तन का कारण अब बनना होगा। त्रेता में विश्व युद्ध का कारण भारतवर्ष था और द्वापर में भी विश्वयुद्ध का कारण भारतवर्ष था और इस समय में भी भारतवर्ष को ही कारण बनना होगा।

मुस्लिम राष्ट्रों में भारी कलह होगी। सभी मुसलमान आपस में लड़कर समाप्त हो जायेंगे। अधिकांश छोटे-छोटे देश टूटकर बड़े राष्ट्रों में मिल जायेंगे। भारतवर्ष इन सबका अगुआ होगा। चीन के समस्त वैज्ञानिक प्रगति को चूर्ण करके चीन को नष्ट कर दिया जायेगा। चीन में बचे-खुचे लोगों की सहायता भारत करेगा। इसी बीच तिब्बत भारत में मिल जायेगा। यदि सभी राष्ट्र आपस में मिलकर भारतवर्ष पर आक्रमण करें तो भी इसे कोई जीते नहीं सकता है। भारत में नए सिरे से संगठन होगा। यदि विश्व के सभी राष्ट्र जी-जान से यह प्रयास करें कि सुरक्षा परिषद अमेरिका से हटकर भारतवर्ष में न जाने पावे तो यह कदापि नहीं होगा। सुरक्षा परिषद भविष्य में भारत में चली आएगी।

महापुरुष का जन्म भारतवर्ष के एक छोटे से गाँव में हो चुका है और वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बड़ा समर्थन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरुष नए सिरे से विधान को बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उसका एक झण्डा होगा। उसकी एक भाषा होगी।

-बाबा जयगुरुदेव
(शाकाहारी पत्रिका-28 अगस्त 1971)

लड़ाई के समय में रक्षा होगी

स्वामी जी ने बताया कि युद्ध के समय सत्संगियों की रक्षा की जाएगी। जयगुरुदेव नाम को बराबर याद करते रहो। यह परमात्मा का नाम है और हरक्षण तुम्हारी रक्षा करेगा।

- बाबा जयगुरुदेव (शाकाहारी पत्रिका: 14 नवम्बर 1971)

पाकिस्तान का ख्वाब मत देखो

भारत की मिट्टी में पले और यहाँ का अन्न-जल ग्रहण करने वाले मुसलमान केवल पाकिस्तान का ख्वाब न देखते रहें। यह तो राम, कृष्ण, कबीर और मुहम्मद की भूमि है। यहाँ के हिन्दू सबको प्यार करते हैं और तुम्हारी कब्रों को पूजते हैं। जो दशा पूर्वी पाकिस्तान की हो रही है वैसा ही नरसंहार पश्चिमी पाकिस्तान में होगा। फिर पाकिस्तान का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। सब भारत हो जाएगा। तब आप कहाँ का ख्वाब देखोगे? भारत की मिट्टी में तो वह भी चीजें हैं जो विश्वभर में नहीं हैं। यह सदा से अध्यात्म का सिरमोर रहा है। भारत के कारण ही विश्वयुद्ध विभिन्न युगों में हुआ और इस युग में भी होगा। दुनिया के सारे देश मिलकर भी भारत पर आक्रमण करें तो भी इसको पराधीन नहीं बना सकते।

स्वामी जी ने कहा कि दिव्य दृष्टि खोलकर परमात्मा का दर्शन कराना तो मेरा काम ही है। पर इसके लिए आपके नैतिक चरित्र को उठाना अनिवार्य है। मैंने 1970 में चार करोड़ नर-नारियों को जगा दिया है। सन् 1972 के अन्त तक भारत में बीस करोड़ लोगों को तैयार कर दूँगा जो विश्व में क्या करेंगे यह समय बताएगा। ***-बाबा जयगुरुदेव***

(शाकाहारी पत्रिका: 7 अक्टूबर 1971)

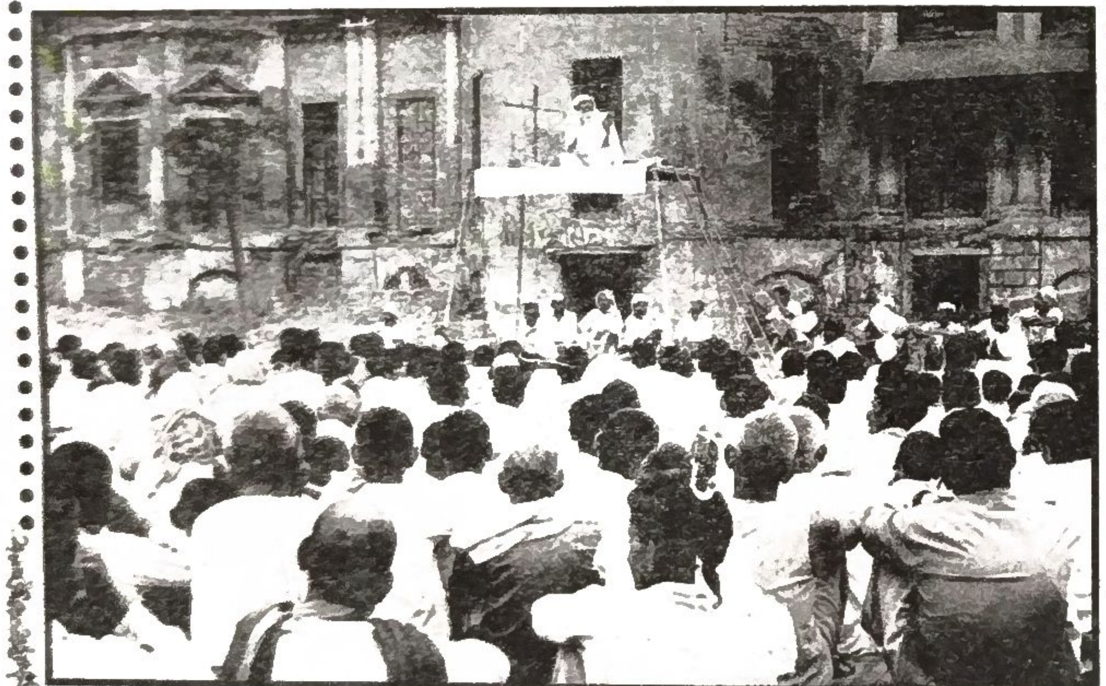

भारत का भाग्य

भविष्य में भयंकर महामारी, भुखमरी, अनावृष्टि और बीमारी आयेंगी। लोग खड़े रहेंगे और एकाएक गिरकर दम तोड़ देंगे। भारत की इस तपोभूमि, पुण्य भूमि पर जन्म लेकर अनाचार, अत्याचार, धोखाधड़ी, बदनीयती भरपेट करते हो। इन्हें तुरन्त छोड़ दो वर्ना विश्व में होने वाली महामारी के शिकार हो जाओगे। विदेशी खान-पान, पहनावा, चाल-चलन छोड़ो और शाकाहारी सदाचारी नितियों को अपना लो। शुद्ध भारतीयता के आचरण में आओ। महापुरुष समय-समय पर भारत में बिगड़ी हुई स्थिति को बदलने के लिए तथा होने वाले भयंकर नतीजों का रोकने के लिए आते रहे हैं। पहले भी विनाश का कारण भारतवर्ष बना था। जिस तरह राम को वन में रहने की हालत में सीता का हरण कारण बना और फिर रावण, सोने की नगरी लंका और उसके समस्त परिवार का विनाश हो गया उसी प्रकार सन् 70, 71, 72 भारत और विश्व के लिए विनाशकारी साबित होंगे। इससे बचने के लिए एक ही उपाय है कि आप लोग हड़ताल, तोड़फोड़, आन्दोलन, आमरण अनशन, निन्दा, चोरी, अनाचार, अत्याचार करना छोड़ दें और अण्डा, मुर्गी, माँस, शराब, ताड़ी, गाँजा, अफीम आदि मादक वस्तुओं को खाना-पीना छोड़ दें। भविष्य में भारत का राष्ट्रपति शाकाहारी, सदाचारी, निरामिष, होगा।

इस तरह से प्रधानमंत्री, एमएलए व एम.पी. पदाधिकारी भी शाकाहारी व निरामिष, देशभक्त होंगे। भारत की राजधानी दिल्ली से हटा दी जायेगी। विश्व की न्यायपालिका अमेरिका से उठकर भारतवर्ष में चली आयेगी। भारत का नया विधान बनेगा जिसे विश्व के लोग मानेंगे। विद्यार्थी कॉलेजों से निकलते ही नोकरी पायेंगे। तिब्बत और नेपाल भारत का अंग बन जायेंगे। पाकिस्तान नाम का कोई देश नहीं रहेगा।

इस समय पूरब में नरसंहार चल रहा है और भविष्य में पश्चिम में, फिर उत्तर में और बाद में दक्षिण में संहार विनाश का होगा। चीन का प्रगति सहित विनाश हो जायेगा। चीन के बचे हुए लोगों की सहायता भारत करेगा। भारत में बिना आन्दोलन के गाय का काटना बन्द हो जायेगा। भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी और संस्कृत हो जायेगी और लोग हिन्दी और संस्कृत भाषा को ग्रहण करेंगे। ***-(शाकाहारी पत्रिका: 7 अक्टूबर 1971)***

जयगुरुदेव

बाबा जयगुरुदेव जी महाराज अपने जयगुरुदेव आश्रम, मथुरा पर प्रेमियों संग होली खेलते।

शाकाहारी सदाचारी बालसंघ

उत्तर प्रदेश के बस्ती शहर में बाबा जयगुरुदेव जी ने 2 अक्टूबर 1971 को जूनियर हाई स्कूल में शाकाहारी सदाचारी बालसंघ के वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता की। बाबा जी ने कहा कि बच्चों! हमारी ओर देखो। पहले हमारे बचपन में स्कूल में सिखाया जाता था कि हम सब गुरु को प्रणाम करें, स्कूल की सफाई करें। हम सब उत्साह से गुरु को प्रणाम करते थे। उनकी सेवा करते थे, स्कूल की सफाई करते थे फिर गुरु जी हमें उत्साह से पढ़ाते थे। प्रसन्न होकर गुरु जी आशीर्वाद देते थे। बच्चों को पहले माता-पिता भी ऐसी ही शिक्षा देते थे। बच्चे अपने माता-पिता के पैर छूते थे। आए हुए महात्माओं के पैर छूते थे। सबके आशीर्वाद से बच्चे ज्ञान प्राप्त करते थे, निरोगी रहते थे, पवित्र रहते थे एवं योग्य बनकर जीवन के हर क्षेत्र में अपनी कार्य क्षमता से लोगों को मुग्ध किये रहते थे। बचपन के आशीर्वाद उठाने वाले होते हैं। बच्चे आशीर्वाद सेवा से प्राप्त करते हैं। मैंने देखा कि पुरानी परम्परा समाप्त हो गई तो नए ढंग से बच्चों के सुधार के लिए गाँधी शताब्दि पर शाकाहारी सदाचारी बालसंघ का निर्माण किया। मैंने बच्चों को सिखाया कि स्कूल जाने के बाद गुरु को प्रणाम करना। माँस, मछली, अण्डा, शराब, गाँजा, अफीम, चरस, बीड़ी, सिगरेट जैसी नशीली वस्तुओं का परित्याग करना। सदा सच बोलना तथा आपस में प्रेम से रहना, तोड़फोड़, आन्दोलन एवं सत्याग्रह न करना। अध्यापकों से प्रार्थना की कि सभी बच्चों के सिर पर टोपी रखावें। क्योंकि वेशभूषा का व्यक्ति पर बड़ा असर पड़ता है। हमारी शोभा वेशभूषा से ही है। अन्दर से चरित्र निर्माण करके और बाहर से वेश बनाकर हम सच्चे रूप में आदरणीय बन सकते हैं। पहले अध्यापकों ने कहा टोपी लगवाना मुश्किल है। पर मैंने कहा कि उन्हें प्रेरित कीजिए। धीरे-धीरे काम शुरू हो गया। अध्यापकों की मदद से बच्चे टोपियाँ लगाने लगे, सबको प्रणाम करने लगे। माँस, मछली, अण्डा, शराब, ताड़ी, बीड़ी, सिगरेट से दूर रहने लगे। सत्य बोलने लगे एवं आपस में प्रेम से रहने लगे।

कोमल बच्चों! तुम चीजों को अच्छी तरह से पकड़ लेते हो। तुम आज जो आदतें बनाओगे वही बनी रहेंगी। मछली को मारने पर वैसी ही

तकलीफ होती है जैसी तुम्हें। हम किसी को मारेंगे तो हमें भी दुःख मिलेगा। ऐसा मैंने सारे देश के बच्चों को सिखाया। सब बच्चों पर काफी असर हुआ। आज पूरे देश में बच्चों की रैलियाँ निकल रही हैं।

अध्यापकों से प्रार्थना है कि कोई बच्चा बिना टोपी लगाये न आये। कोई गन्दी चीजों को न खाये अन्यथा बच्चे रोगी एवं दुःखी होंगे। नव-निर्माण देश का बच्चों से, अध्यापकों से होगा। अध्यापक बड़े खम्बे हैं। वे अपने सचरित्र द्वारा बच्चों को खड़ा कर सकते हैं। बच्चों का प्रारम्भ से ही निर्माण शुरू कर दिया जाये तो सभी स्कूलों में बच्चे सुधरे रहेंगे और बड़े कॉलेजों में भी बच्चे टोपी लगाए एवं शाकाहारी तथा सदाचारी रहेंगे। उनके अध्यापक भी ऐसे ही रहेंगे।

बच्चों! माँस, मछली, अण्डा न खाना। गुरुजनों को प्रणाम करना, खूब पढ़ना। तुम सदा फूलो-फलो, तुम्हारा संघ सदा फूलता-फलता रहे।

-बाबा जयगुरुदेव

(शाकाहारी पत्रिका: 21 अक्टूबर 1971)

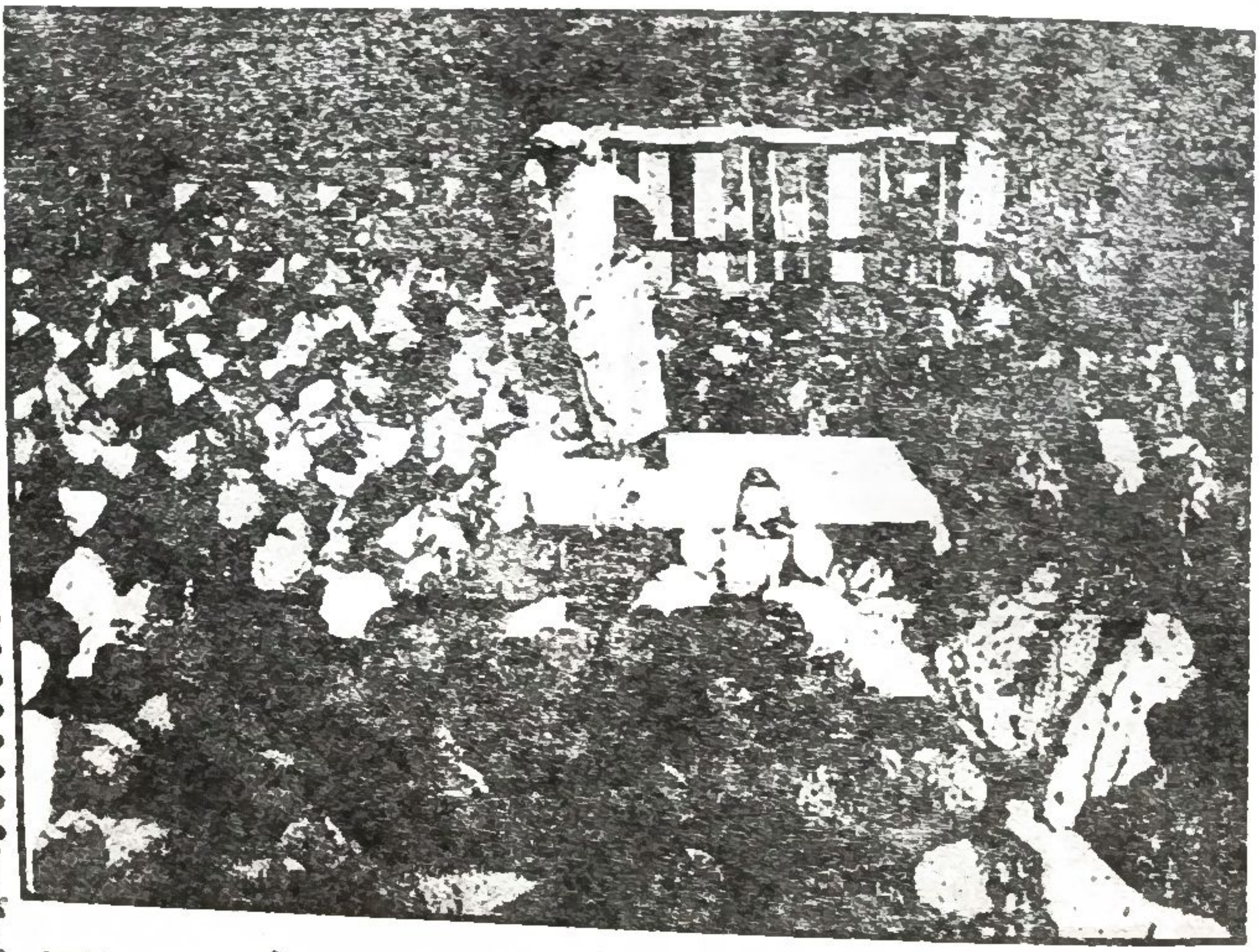

बाबा जयगुरुदेव जी महाराज सत्संगी प्रेमियों के बीच वचन सुनाते हुए